ੴ १ओअंकार सतिगुर प्रसादि ।।

सिक्ख समाज की अधोगति का कच्चा चिट्ठा एवं उसका समाधन

श्री गुरू ग्रंथ साहिब की वाणी हमारा संविधान है। इस के अनुसार समस्त सिक्ख जगत को सावधान रहना चाहिए कि हम जग दिखावे अथवा अज्ञानता वश गुरुमत विरोधी कर्मकाण्ड (पाखण्ड) तो नहीं कर रहे जिन्हें गुरुदेव फोकट कर्म कह कर कड़े शब्दों में भर्त्सना कर रहे है। यदि ऐसा है तो हमें कभी भी आध्यात्मिक दुनिया की प्राप्तियां कदाचित नहीं हो सकती। ऐसे में हमारा समय, धन तथा परिश्रम सभी नष्ट हो जाएगे। भावार्थ यह कि

लॉच करता

क्रांतिकारी जगद् गुरू नानक देव चैरिटेबल ट्रस्ट, चण्डीगढ़

Lunched By : Jasbir Singh
9988160484, 62390-45985
0172- 2696891

Type Setting By :
Radhe Shyam Choudhary
98149-66882

निःशुल्क सेवा : स्वयं पढ़े और अन्य लोगों को पढ़ाये।

Download Free

भूमिका

एक जिज्ञासु, एक महापुरुष के डेरे पर जाता था और उनसे निवेदन करता था कि उसे भी **'नामदान'** दिया जाए ताकि वह भी आध्यात्मिक दुनियां का पांधी बन जाये। इस पर महापुरुष उसकी मन की दशा देखकर कह देते 'नाम धन' तुझे अवश्य ही मिलेगा परन्तु उसके लिए तुम हृदय रूपी बर्तन स्वच्छ करो और उसके पात्र बनों। इस प्रकार जिज्ञासु की मांग **'नाम धन'** मांगने की बनी रही परन्तु महात्मा ने उसे **'नाम दान'** नहीं दिया। एक दिन महात्मा ने जिज्ञासु की मांग की तीव्रता को देखते हुए उसने कहा- 'आज हम तुम्हारे घर आयेंगे और तुझे 'नाम दान' देंगे। निश्चित समय पर महात्मा उसके घर पहुंच गये और उन्होंने अपना भिक्षा वाला पात्र (**कमण्डल**) उसे दिया कि इसमें एक कटोरा दूध डाल दो, तो फिर मैं तुझे 'नाम रूपी धन' देने की प्रतिक्रिया प्रारम्भ करता हूं। जब जिज्ञासू ने कमण्डल देखा तो उसमें दुर्गन्ध आ रही थी, उसमें गोबर था, इस पर जिज्ञासू ने कहा- यह कमण्डल मुझे दीजिए मैं पहले इसे स्वच्छ कर लूं फिर इसमें दूध डालकर लाता हूं, परन्तु महात्मा कहने लगे नहीं इसी में दूध डाल दो, जिज्ञासु कहने लगा यदि मैंने इसे स्वच्छ किये बिना दूध डाला तो वह खराब हो जाएगा और किसी काम नहीं आयेगा। तब महात्मा कहने लगे मैं भी तो यही कहता चला आ रहा हूँ कि तुम्हें 'नाम धन' देने को तैयार हूं परन्तु पहले हृदय रूपी बर्तन स्वच्छ करके तैयार रखो नहीं तो 'नाम-रूपी' धन नष्ट हो जाएग वह फलीभूत नहीं होगा। इस पर महात्मा जी से जिज्ञासु प्रार्थना करने लगा कि मुझे हृदय रूपी बर्तन स्वच्छ करने की युक्ति सिखा दे। तब महात्मा कहने लगे सर्वप्रथम यह जान लो जैसा अन्न तैसा मन होता है। अतः अपना खान-पान शुद्ध करो और फिर अपनी विचारधारा में नित्यप्रति संशोधन करते चले जाओ। तात्पर्य यह कि पर निन्दा, झूठ, ईर्ष्या तथा चुगली इत्यादि प्रवृत्तिओं का परित्याग इस कार्य के लिए अनिवार्य है। बाकी रही बात **काम, क्रोध, लोभ, मोह तथा अहंकार** इत्यादि महा दोषों की तो वे शक्तियां मरती नहीं केवल इन पर नियंत्रण कर के इन का सदुपयोग करने की विधि 'नाम' साधना से धीरे-धीरे दृढ़ होती चली जाती है।

'नाम' महाशक्ति है यदि जिज्ञासु के हृदय में इस का बीज जड़ पकड़ गया तो यह धीरे-धीरे विकसित होता चला जाएगा। जिसके तेज प्रताप से आत्मा बलवान होती चली जाती है जो कि इन प्रवृतिओं पर अंकुश रखने में सफल सिद्ध होती है।

अब प्रश्न है 'नाम क्या है? उत्तर है नाम और नामी में अन्तर नहीं होता। नाम लेने मात्र से नामी का बोध होता है अर्थात नामी के गुण प्रगट होते हैं। हमारा नामी है 'सत्य' तो स्पष्ट है नामी का दायरा बहुत विकसित है। इसमें

समस्त दैवी गुण आ जाते है। **जैसे: – दया, धैर्य, सन्तोष, क्षमा, विनम्रता, त्याग, बलिदान तथा मधुर भाषी इत्यादि।** इन सभी शुभ गणों का भण्डार है वे 'सत्य' शायद इस लिए उस दिव्य शक्ति को सच्चिदानंद भी कहते है भावार्थ यह कि वह निराकार ज्योति – सत् चित आनंद है। आध्यात्मिक दुनियां का सिद्धांत है, जिसे याद करो उसी के गुण याद करता के हृदय में विकसित होते चले जाते हैं, यदि सदैव उसी की याद हृदय में समाई रहे तो स्वभाविक ही है नामी और भगत में गुणों की समानता होती चली जाती है। तात्पर्य यह है कि भक्त में उस दिव्य ज्योति अर्थात् सत्य के दर्शन होने प्रारम्भ हो सकते हैं।

उपरोक्त विचारधारा से सिद्ध होता है वह दिव्य ज्योति अर्थात् प्रभु, ईश्वर कहीं बाहर खोजने की आवश्यकता नहीं वह तो सर्वत्र विद्यमान है, केवल हमें ही अन्तर मुखी होना है और अपने हृदय में झांकना है। हृदय परिवर्तन की प्रतिक्रिया ही प्रभु की खोज है।

पाखण्ड की परिभाषा

परिभाषा : – वे किये गये धार्मिक कर्म जिस में केवल जग दिखावा हो, मन में प्रेम व विश्वास का अभाव हो, जिस क्रिया से दूसरों को प्रभावित करके धन अर्जित करने का लक्ष्य हो। जिसमें स्वयं का हृदय भी आस्था न रखकर विचलित रहता हो और सदैव मन एकाग्र न होने के कारण खण्डित रहता हो। ऐसे सभी धार्मिक कर्मों को पाखण्ड कहते है।

• • • • •

क्या कर्म काण्डों द्वारा आध्यात्मिक प्राप्तियां सम्भव है?

क्या विवके बुद्धि के समक्ष कर्म काण्डों का कोई अस्तित्व रह जाता है?

हम इस लेख में इस बात की समीक्षा करेंगे।

सिक्खों पर राजनैतिक कारणों से किये गये अत्याचार

सिक्ख सम्प्रदाय की विशेषता यह है कि समस्त विश्व में उनकी वेष – भूषा तथा उनकी न्यारी पगड़ी – साबुत सूरत दाड़ी – केश अर्थात न्यारा स्वरूप उनको आदर – सम्मान दिलवाते है, लोग उनको सरदार जी कह कर उनका आदर – सम्मान करते है। इस का सीधा सा अर्थ है आप लोग समस्त विश्व की सरदारी करने के योग्य हैं क्योंकि आप के गुरुजनों ने समस्त विश्व को एक भ्रातृवाद में जीवन जीने की प्रेरणा दी है। सिक्खों लोगों का सिद्धांत है **'न को बैरी, नहीं बिगाना सगल संग हम कउ बनि आई'।।** अर्थात आप लोग बन्धुत्व के कलावे में सभी मानव समाज को रखने की क्षमता रखते हैं।

परन्तु आप लोगों के इन्हीं शुभ गुणों के कारण कुछ ईर्ष्यालु लोग आप को सहन नहीं कर पाते इस लिए वे प्रतिद्वन्दी के रूप में समय – समय उभर कर दृष्टि गौचर होते रहते है यदि हम भारतीय इतिहास पर एक दृष्टि डाले तो पाते है कि अठाहरवीं शताब्दी के प्रारम्भ से ही भारत वर्ष के शासक वर्ग मुग़ल कुछ राजनीतिक कारणों से सिक्खों के कट्टर शत्रु बन गये थे उन्होंने सिक्खों का चुन – चुन कर नर – संहार किया, उनका संकल्प था कि सिक्ख सम्प्रदाय समाप्त कर के ही दम लेना है परन्तु सिक्खों के साथ उनके शुभ गुण थे जिस कारण उनकी रक्षा परमपिता परमेश्वर स्वयं करते थे। मुग़लों ने एड़ी – चोटी का जोर लगाया उन्होंने जुलमों सितम की सीमा पार कर दी जिस के अंतर्गत उन्होंने सिक्खों के मासूम बच्चों को हवा में उछालते और नीचे भाला रख दिया जाता इस प्रकार नन्हें बच्चों को उनकी माताओं के सामने टुकड़े – टुकड़े कर के उनकी माताओं के गले में मालाए बना कर डाल दी जाती और बल पूर्वक सिक्ख महिलाओं को इस्लाम स्वीकार करने की लिए विवश किया जाता परन्तु किसी भी सिक्ख महिला ने इस्लाम स्वीकार नहीं किया इस के बदले मृत्यु परवान कर ली। यह घटनाक्रम सन 1750 ई. लाहौर की जेल का है उस समय शासक था मीर मनू इसी शताब्दी की अन्य घटनाओं से सिक्ख इतिहास की कुरबानियों, बलिदानों की दास्ताने सिक्खों की अरदास में संजोई हुई है। जैसे – जिन्होने, बन्द – बन्द कटवाए, खोपरी उतरवाई चरखड़ियों पर चढ़े, उल्टी लटका कर खाल (**चम्ड़ी**) उतारी गई इत्यादि। फिर समय बदला अंग्रेज़ जो अपने को सभ्य समाज मानते थे उन्होंने सिक्खों पर उनके स्वतन्त्रता संग्रामो अथवा गुरुद्वारा सुधार लहर में अत्याचार की सीमा ही पार कर दी। जो सिक्ख सैनिक उनके राज्य को सुदृढ बनाने में अपने प्राणों का बलिदान दे रहे थे उन पर अमानवीये अत्याचारों की शृंखला ही लगा दी जैसे – जन्म भूमि ननकाना साहब, भ्रष्ट महंतों के चुंगलो से स्वतन्त्र करवाने के आन्दोलन में षड़यन्त्रकारी अंग्रेज़ ने महंत नयरैणु द्वारा शान्ति प्रिय सिक्खों के जत्थे को जीवत तेल डाल कर अथवा कुल्हाड़ी – गंड़ासों से काट – काट कर मरवा दिया। इस जत्थे के सदस्यों की संख्या 125 व्यक्तियों की थी यह घटना सन् 21 फरवरी 1921 ई. की है। तद्पश्चात आन्दोलन गुरू के बाग में अंग्रेज़ों द्वारा सिक्ख जत्थों को पुलिस के वरिष्ठ अधिकारी बी.टी. के संकेत पर पठान सिपाहियों द्वारा डांगों से अंधाधुंध पीटा जाना। ये सिक्खों के जत्थे केवल अहिंसक प्रदर्शन कर रहे होते थे और इनकी संख्या 20 से 25 व्यक्तियों तक सीमित होती थी। यह आंदोलन लगभग तीन मास चलता रहा – – – – – तद्पश्चात – मोर्चा गंगसर जैतों में शांति प्रिय सिक्ख आन्दोलनकारियों को अंग्रेज़ों ने 500 व्यक्तियों के समूह को गोलियां मार कर मृत्यु शय्या पर सुला दिया। इस प्रकार गद्दार आन्दोलन तथा नामधारी आन्दोलन में अंग्रेज़ों ने सैकड़े सिक्खों को फांसी पर लटकाया और तोपों से उड़ा दिया। जो सिक्ख जेलों अथवा काल कोठड़ियों में बन्द रहते थे उनकी संख्या हजारों में थी। इस का ज्वलंत उदाहरण अंडमान (**कालापानी**) की जेलों की सूची में मिल जाता है।

अब भारत की स्वतन्त्रता के पश्चात सत्ताधारियों ने सिक्ख साम्प्रदाय के साथ अल्प संख्यक होने के कारण सौतेली माता वाला दोगला व्यवहार किया उस का वर्णन एक बहुत बड़ी पुस्तक में ही किया जा सकता है। परन्तु यहां सारांश में केवल कुछ प्रमुख घटनाक्रमों का वर्णन अनिवार्य महासूस करता हूँ : – भारत की स्वतन्त्रता के समय देश के सभी नागरिकों से वायदा किया गया था

कि भाषा को आधार बना कर प्रातों : का पुनर्गठन किया जाएगा परन्तु पंजाबी भाषा को आधार बनाकर नये राज्य का पुर्न गठन नहीं किया गया इस कार्य के लिए बहुत समय तक आन्दोलन चलाने पड़े जिस में अनेकों कुर्बानिया देनी पड़ी तद्पश्चात पंजाब के विभाजन के समय बन्दर बाट कर ली गई। पंजाब से नदियों का पानी, बिजली के स्रोत तथा उनकी राजधानी षड़यन्त्र के अन्तर्गत छीन ली गई।

इन सभी स्रोतों को वापिस प्राप्त करने के लिए फिर से आन्दोलन चलाने पड़े इन अन्दोलनों में इस बार इन में विशेषता यह थी कि इस बार पंजाब तथा अन्य प्रातों के लिए कुछ विशेष अधिकारों की मांग की गई थी भाव यह कि भारतीय सविधान के परिधी के अंतर्गत स्वैतन्त्रता के अधिकार की मांग की गयी। इस आन्दोलन को कुचलने के लिए केन्द्र सरकार ने एक विशेष षड्यन्त्र रचकर इस आन्दोलन को खालिसतान आन्दोलन का नाम देकर इस सच्चे-सुच्चे आन्दोलन को बदनाम करने के लिए अपनी गुप्त एजेंसियों द्वारा भारतीय जनमानस में सिक्खों के प्रति नफरत फैलाई और उसके प्रतिक्रम में श्री दरबार साहब अमृतसर में ब्लूस्टार नामक अभियान के अंतरगत भारतीय सेना द्वारा विशाल आक्रमण किया परिणाम स्वरूप लाखों निर्दोष सिक्ख लोगों की हत्या की गई।

इसके अतिरिक्त सिक्खों को कुचलने के लिए कई अन्य अभियान चलाए गए जैसे ब्लेक थंडर-वुडरोज ओपरेशन के अंतर्गत सरकारी गुप्त एजेंसियों ने पंजाब की युवा सिक्ख पीड़ी के युवकों को घरों से उठाकर लगभग पचास हजार युवकों को झूठे पुलिस मुकाबले में मौत के घाट उत्तार दिया और इसके बदले में पुलिस कर्मियों ने इनाम तथा पदों उन्नति प्राप्त किया। परिणाम स्वरूप इन्द्रागांधी की हत्या कर दी गई। तद्पश्चात समस्त केन्द्रिय एजेंसियों को आदेश दिये गये कि सभी सिक्ख साम्प्रदाय को सदा की नींद सुला दिया जाए । इस कार्य के लिए विशाल षड़यन्त्र रचे गये दिल्ली पुलिस को पंगू बना दिया गया। **1 नवम्बर 1984 से लेकर 3 नवम्बर 1984** वाले दिन, दिन दिहाड़े देश की राजधानी दिल्ली में निर्दोष सिक्ख परिवारों की, भीड़ द्वारा हत्याए करवाई गई महिलाओं के साथ बलात्कार किये गये इस खूनी ताड़व नृत्य में लगभग दस हजार निर्दोष सिक्खों की हत्या कर दी गई। इस काली करतूत में उस समय के प्रधान मंत्री तथा उसके कैबिनेट के सभी सदस्य सम्मिलित थे। इस कारण आज तक निर्दोष लोगों कि विशाल संख्या हत्याओं का 36 वर्ष पश्चात भी न्याय, इन्साफ नहीं मिला क्योंकि सत्ताधारी केवल न्याय दिलवाने का सदैव ढोंग रचते रहते है। सन् 1984 के वर्ष में भारतीय सत्ताधारियों द्वारा कुल मिलाकर लगभग एक लाख निर्दोष देश भक्त सिक्खों की हत्या कर दी गई इस सब के पीछे मूल कारण इन्द्रा गांधी को चुनाव जीतने के लिए फिर से दुर्गा देवी बनने की इच्छा थी जिस से उस का वोट बैंक प्रफुल्लित हो सके इस कार्य के लिए उसने दो विकल्प रखे थे। प्रथम-तमिल बागी गूरिल्लो द्वारा श्री लंका पर आक्रमण करना तथा दूसरा सिक्खों को कुचलने के लिए काल्पनिक खालिस्तान का हऊवा खड़ा करना। उस का पहला अब्शन वरिष्ट सैनिक अधिकारियों द्वारा पारित नहीं किया गया तब उसने अपनी गुप्त एजेंसियों द्वारा पंजाब में खालिस्तान की मांग का प्रचार किया। इन्द्रा का लक्ष्य होता था पहले आग लगाओं फिर उसे बुझाने का नाटक कर के जन साधारण के समक्ष हीरो बन जाओ।

Justice Delay, Justices Denie

यह थी सारांश में मुस्लिम (**मुग़ल**) क्रिश्चन (**अंग्रेज़**) तथा हिन्दूओं (**RSS**) द्वारा सिक्खों को कुचल कर समाप्त करने की नीतियां, परन्तु सिक्खों के पास अपने गुरुदेव के प्रति श्रद्धा भक्ति तथा बलिदान देने की युक्ति है जिससे वे बार-बार कड़ी परीक्षाओं में से सफल हो कर फिर से उभर आते है और दृढ़ता से सिक्ख सिद्धांतों पर पहरा देते है।

नेहरू गांधी परिवार की काली करतूतों पर एक विशेष विशाल किताब लिखी जा सकती है परन्तु मैं अब सारांश में संकेत मात्र कह रहा हूँ, सन् 1984, 1 नवम्बर से 3 नवम्बर तक भारत देश की राजधानी-दिल्ली में दिन दहाड़े 3 दिन तक एक विशाल षड्यन्त्र के अंतर्गत देश भक्त-निरपराध सिक्ख लोगों का नर-संहार किया गया। इस सुयोजित षड्यन्त्र में केवल दिल्ली में दस

हजार सिक्ख लोगों की हत्याएं हुई जो विश्व-रिकार्ड है। विडम्बना यह है कि धर्म निर्पेक्ष भारतीय सविधान के अंतर्गत 36 वर्ष के अन्तराल के पश्चात भी पीड़ित सिक्ख समाज को न्याय नहीं मिला जब कि इस समय में कई राजनीतिकदलों की सरकारे बदलती रही हैं। अब मैं इस बात को इस प्रकार कह सकता हूँ। ये सामूहिक हत्याएं।

स्वतन्त्रता के पश्चात भारतीय इतिहास में धर्म निर्पेक्ष संविधान पर एक गहरा काला धब्बा है जो कि कभी धुल नहीं सकता।

हाए पंजाबी, हाए पंजाबी

कुछ वर्ष पहले की बात है सैक्टर-34 के गुरुद्वारा चण्डीगढ़ के बेसमैन्ट में पंजाबी प्रचारकों द्वारा एक सैमीनार रखा गया। उस में बहुत से वक्ताओं ने अपने विचार व्यक्त किये, उनका मानना था कि पंजाबी ही सिक्खी की जड़ है यदि पंजाबी नहीं तो सिक्खी नहीं। इस पर मैंने उनसे अनुरोध किया कि कृप्या कुछ समय मुझे भी दे मैं भले ही विरोधी पक्ष का हूँ। परन्तु डिबेट में मेरे कुछ पुवाईट आपके लिए बहुत हितकर होगे। मेरा आग्रह स्वीकार कर मुझे कुछ समय दिया गया-मैंने अपने वक्तव्य में सर्वप्रथम कहा-श्री गुरु ग्रंथ साहब जी भले ही गुरुमुखी लिपी में है परन्तु उनमें भाषाएं तो अनेक है। अत: भाषा कोई भी छोटी बड़ी नहीं होती सभी आदरणीय है। हमारे गुरुदेव श्री गुरु गोबिन्द सिंघ जी ने अपने जीवन काल में कुछ विशेष सिक्ख विद्वानों को काशी संस्कृत पढ़ने के लिए भेजा था। इस समय देश में लगभग 70 करोड़ लोग हिन्दी (देव नागरी लिपी) पढ़ लिख लेते है यह भाषा जन-साधारण की है। यदि हम सिक्खी का प्रचार-प्रसार करना चाहते है तो हिन्दी (**देवनगरी लिपी**) में अपना साहित्य तैयार कर उन्हें उपलब्ध करवाएं। हमें दूसरे सम्प्रदायों की प्रचार करने की विधि से कुछ सीखना चाहिए-क्रिश्चिन लोग अपने धर्म का साहित्य लगभग **200** भाषाओं में प्रकाशित करवा कर नि:शुल्क बांटते है।

वास्तव में कोई भी धर्म अथवा सम्प्रदाय किसी विशेष भाषा से बंधा हुआ नहीं रहता वह तो उसके सिद्धांतो तथा परम्परा का पालन ही करते है उसके लिए भाषा कोई भी हो सकती है। उदाहरण के लिए-इस्लाम का मूल साहित्य अरबी में है परन्तु भारत में कोई भी अरबी नहीं जानता तब भी यहां के स्थानीय मुस्लिम भारत के विभिन्न क्षेत्र में विभिन्न भाषाएं बोलते हुए भी कट्टर मुस्लिम हैं। ठीक इसी प्रकार हिन्दुओं का मूल साहित्य संस्कृत में है परन्तु हिन्दुओं में पंडितों को छोड़कर संस्कृत कोई भी हिन्दू नहीं जानता तब भी वे लोग कट्टर हिन्दू हैं। ऐसे है बुद्धिष्ट लोग दुनियां के अनेकों देशों में फैले हुए है परन्तु उसका मूल साहित्य पाली में है परन्तु पाली भाषा वे लोग नहीं जानते फिर भी अपने को महात्मा बौद्ध के अनुयायी होने का दावा करते है। भारत के विभाजन के पश्चात सिक्ख लोग भी देश के अन्य क्षेत्रों में बस गये हैं बल्कि दुनियां के अनेकों देशों में प्रवासी बनकर स्थाई रूप में बस गये है। इस प्रकार उनकी नई पीड़ियां धीरे-धीरे पंजाबी भाषा से कटती जा रही है, परन्तु वे लोग दृढ़ता से अपने आप को सिक्ख कहते है और कुछ एक को छोड़कर सिक्खी स्वरूप तथा सिक्ख सिद्धांतों पर पहरा देते हैं। यही बस नहीं, अमेरिका के मूल नागरिकों ने सिक्ख धर्म अपना लिया है जो कि पंजाबी नहीं जानते तथा वे लोग कमी भी पंजाब नहीं आये यदि आप उनसे मिलेगे तो वे लोग हम से कहीं अधिक गुरु घर के सिद्धांतों पर श्रद्धा रखते है और त्रुटियां रहित जीवन व्ययापन करते है और सिक्खी के न्यारे पन पर पहरा देते है।

मान लो अगर सिक्खी पंजाबी से बंधी होती तो पाकिस्तान के पंजाबियों को तो सिक्ख हो जाना चाहिए था ठीक इसी प्रकार सन 1984 ई. के श्री दरबार साहब पर भारतीय सेना के आक्रमण के समय स्थानीय हिन्दूओं (**माशा**) लोगों ने सेना की अगवानी की और उनको मठाईयां बांटी। ये लोग सभी पंजाबी थे जो कि हम से अच्छी गुरमुखी पढ़ लिख लेते है और हमारे सामाजिक कार्यों में हमारे घरों में जन्म-मरण, विवाह इत्यादि समारोहों में अकसर भाग लेते हैं। परन्तु उस विपती काल में कट्टर शुत्रों की भूमिका निभाई। अब बताओ यदि पंजाबी भाषा सिक्खी का मूल स्रोत होता तो इन लोगों को तो सिक्ख अवश्य ही होना चाहिए था।

पंजाबी की युवा पीड़ी को ध्यान से देखों तो कुछ एक को छोड़ कर अधिकांश युवकों के चेहरे पर उनकी दाड़ी ऐसे दिखाई देती है, जैसे किसी मीठी वस्तु पर चींटियां चिपकी हुई हो वैसे तो पंजाब में युवकों का बुरा हाल है अधिकांश ड्रग्स इत्यादि के आदी है और उन्होंने सिक्खी के न्यारे पन को तिलाजली ही दे दी है। इस के विपरीत पंजाब से दूर के प्रान्तों में जहां भी सिक्ख बसे हुए हैं वे लोग साबुत सूरत हैं किसी ने भी सिक्खी के मूल सिद्धातों को नहीं त्यागा जब कि वे लोग ठीक से पंजाबी नहीं बोल पाते परन्तु श्रद्धा से ओत-प्रोत दिखाई देते है। उनके बच्चों को पंजाबी (**गुरमुखी लिपी**) बल पूर्वक सिखाई जाती है, ताकि वे गुरुवाणी का अध्ययन कर सके परन्तु उनकी मुश्किल यह है कि गुरमुखी कही ओर अन्य कार्यों में काम नहीं आती अत: वे इसे भूल जाते हैं। इसके अतिरिक्त पंजाबी और हिन्दी में बहुत सी समानताएं है जिस से दोनों लिपियां रल मिल जाती है। मेरा यह सब लिखने का तात्पर्य है कि इन समस्याओं को पहचाने उनका समाधान के लिए प्रयास करें।

इस समस्याओं का सब से बड़ा समाधान यही है कि हम स्वयं को समय की मांग के अनुकूल ढालने का प्रयास करें, हाए पंजाबी-पंजाबी का रोना न रोकर अपने बच्चों को भाषा की दीवार से मुक्त करें और उनको उसी भाषा में गुरमत साहित्य खरीद कर दे जो वे जानते है। तात्पर्य यह कि उन्होंने जिस भाषा में प्रारम्भिक शिक्षा पाई है क्यों कि सिक्ख लोग देश के अन्य भागों में बसने वाले समृद्ध है वे अपने बच्चों को अंग्रेज़ी माध्यम के स्कूलों में पढ़ाते हैं अत: उनको चाहिए कि वे जिस किसी भी भाषा में अपने बच्चों को प्रारम्भिक शिक्षा दिलवा रहे हैं। उसी भाषा में गुरमत साहित्य उपलब्ध करवाए। इस कार्य के लिए वे लोग मिशनरी कॉलेज की सहायता ले, उन्होंने बच्चों के लिए तीनों भाषाओं में गुरमत साहित्य प्रकाशित किया हुआ है। 1. दस पातिशाहियाँ को संक्षिप्त जीवन 2. सिक्ख धर्म के प्रारम्भिक सिद्धांत तथा खून शहीदों का इत्यादि। यदि बच्चा इन तीनों लघु पुस्तकों का अध्ययन कर लेगा तो वह कहीं भी भटक नहीं सकता बल्कि उसे आगे गुरमत ज्ञान प्राप्त करने की इच्छा जागृत हो जाती है।

खालसा कॉलेजों की दुर्दशा

मैं सन् 1992 ई. में सैक्टर 37 चण्डीगढ़ के गुरद्वारा साहिब में सचिव की डियूटी कर रहा था। उनदिनों सैक्टर 26 के श्री गुरू गोबिन्द सिंघ कॉलेज की तरफ से निमन्त्रण पत्र मिला कि आप कॉलेज की उन्नत्ति के लिए विचार विमर्श में भाग लेने के लिए अपना एक प्रतिनिधी भेजे। प्रधान साहब ने मुझे भेजा। वहां लगभग नगर के सभी गुरद्वारों के प्रतिनिधी उपस्थित थे। तब कॉलेज के प्रिंसिपल ने अपने वक्तव्य में कहा कि हमें आप अपने कोष से कुछ अंश दे जिस से बच्चें की शिक्षा का स्तर ऊँचा किया जा सके तथा बच्चों के लिए यहां गुरुद्वारे की आधारशिला रखी जा सके। तद्पश्चात सभी गुरद्वारों के प्रतिनिधियों ने अपने-2 विचार रखे परन्तु सभी वक्ताओं में एक बात सामान्य थी। वे एक दूसरे की प्रशन्सा के पुल बांध रहे थे और हंसी-मज़ाक में ठहाले लगा रहे थे। तब मैंने भी उनसे आग्रह किया मुझे भी अपने विचार व्यक्त करने का अवसर दिया जाए। जब मुझे समय दिया गया तो मैंने कहा-गुरूघर की गोलक सभी आप की है बस शर्त यही है कि आप मुझे यह बता दे कि आप के सलेब्स में बच्चों को कौन सी धार्मिक पुस्तकें पढ़ाई जाती हैं उनके लिए सप्ताह में कितने पीरियड है और इस कार्य के लिए आप के पास धार्मिक अध्यापक कौन से और कितने है? मेरी यह बात सुनते ही प्रिंसिपल को मानों सांप सूंघ गया हो। वह मुझे कहने लगा मेरी गोदी में बैठकर मेरी दाड़ी नौचते हो। इस पर मैंने कहा कौम को धोखे में न रखें आपने कॉलेज का नाम रखा हुआ है, "**श्री गुरू गोबिन्द सिंघ कॉलेज**" परन्तु यह सब छलावा भर ही है क्योंकि यहां हमारे बच्चों को गुरमत विद्या नहीं दी जाती, वह लोग गुरमत से कोरे ही रहते है। केवल अभिभावकों को यह भ्रम रह जाता है कि हमारे बच्चे स्कूली शिक्षा के साथ धार्मिक शिक्षा भी ग्रहण कर रहे है। जब कि होता ठीक इस के विपरीत है यदि मेरी बात में किसी को शक है तो आप केवल मैट्रिक स्टैंड के बच्चों से दो सौ शब्दों का एक लेख (**निबन्ध**) किसी भी भाषा हिन्दी, पंजाबी अथवा अंग्रेजी इत्यादि में श्री गुरु गोबिन्द सिंघ जी के जीवन पर लिखवाएं यदि इनमें से आधे बच्चे 50 प्रतिशत नम्बर लेकर पास हो जाते है तो हम आप को मुंह मांगी रकम गुरू की गोलक से दे देंगे। मेरे इस वकतव्य से

सभी बगले झांकने लगे इस पर प्रिंसिपल को कोई उत्तर नहीं सूझा उसका मुंह उत्तर गया उस का बना बनाया खेल जो बिगड़ गया था अत: मीटिंग समाप्त हुई और सभी ने लड्डू पकोड़े खाएं और वापस चल दिये।

प्रबन्धकों तथा प्रचारकों में मतभेद

मैं अक्सर गुरमत साहित्य (गुरुपर्व बुकलेट) संगत में बांटने विभिन्न- गुरुद्वारों में जाता रहता हूँ। जब कभी उनके मुख्य प्रचारक (हैड ग्रंथी सिंघ) कथा वाचक से भेंट होती है अथवा विचार विमर्श होता है तो वे लोग खून के आंसू रोते हैं और कहते है कि स्थानीय कमेटी हम पर बहुत अंकुश लगाती है हमें गुरमत की सही ढंग से व्याख्या नहीं करने देते, कमेटी के अधिकांश सदस्य गुरुमत विरोधी जीवन जीते है वे धनाढय होने के कारण कमेटी पर कब्जा किये बैठे रहते है। वे लोग हम पर दबाव बनाएं रहते है कि हम लोग शराब पर कोई गुरमत विचार न रखे फिर दूसरा सदस्य कहता है आप मांस मदिरा पर कुछ न बोले। बात यही समाप्त नहीं होती कोई सदस्य यह भी कहते है हमारी सहजधारी संगत नाराज न हो जाए अत: आप देवी-देवताओं अथवा मूर्ति पूजा का खडन न करें इत्यादि- इत्यादि। ऐसे में अब आप यह बताएं कि हम सही ढंग से गुरमत प्रचार कैसे करें? हम लोग गुरू के वज़ीर न होकर इन लोगों के व्यक्तिगत नौकर होकर रह गये है। जब हम कर्म काण्डों का खण्डन नहीं करेंगे तो किस न्यारे खालसे की तस्वीर संगत के समक्ष रखेगे। वास्तव में संगत के समक्ष उचित ढंग से हम गुरमत विचार धारा प्रस्तुत नहीं कर पाते तभी तो मिल गौबा जीवनशैली फल-फूल रही है। आप ने अक्सर संगत के बाजूओं पर धागे-मोलियां बंधी देखी होगी यह इन्हीं त्रुट्टियों का परिणाम है। मैंने उनसे सहमति प्रगट की और कहा ..... आप लोग गुरुमति के दस मूल सिद्धांतों पर प्रकाश डालते रहा करें। इन्हीं में सिक्ख की न्यारी परम्परा छिपी हुई है जिस का व्याख्या सभी बाधाओं को हटा देगी। अब उन का प्रश्न था कि कृप्या इन दस सिद्धांतों पर प्रकाश डाले-उत्तर में मैंने कहा वैसे तो मैंने एक गुरुपर्व बुकलेट में विस्तृत रूप में प्रकाश डाला है यह हिन्दी तथा पंजाबी दो भाषाओं में है, अब इनको **website : sikhworld.info** के **main links** में गुरुपर्व बुकलेट में लाँच किया हुआ है इनका **download free** है।

गुरुमत के मूल ग्यारह सिद्धांत

यूं तो श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी दुनियां के सर्वश्रेष्ट सिद्धांतो का भण्डार है अत: हम कहते है यही वाणी हमारा सविधान है जिस की छतर-छाया में हमने अपने न्यारे पन का जीवन जीना है। तो भी गुरुमत के दस मूल सिद्धांत ये हैं : श्री गुरु नानक देव जी अपने प्रचार दौरों में इस तीन सिद्धांतों का समस्त मानवता के उदार के लिए प्रचार-प्रसार करते थे। किरतकरो, बंड छको तथा नाम जपों भावार्थ यह कि परिश्रम करके भ्रष्टाचार रहित आय से दसवां भाग जरूरतमंदो पर खर्च करो तथा अवकाश के समय प्रभु चिंतन-मनन करो। तद्पश्चात अगले गुरूजनों ने सिक्ख समाज को तीन सिद्धांत ओर दिये पूजा अकाल की, पर्चा शब्द का तथा दीदार पंथ खालसे का जिस का सीधा अर्थ है केवल निराकार परब्रह्म परमेश्वर की आराधना करनी है, ज्ञान प्राप्ति के लिए केवल श्री गुरु ग्रंथ साहिब की वाणी को ही आधार मानकर आध्यात्मिक दुनियां में विचरण करना है। गुरू घर की सत् संगत के दर्शन ही साकार प्रभु के दर्शन-दीदार हैं। इन छ: सिद्धांतों का पालन प्रत्येक सिक्ख ने करना है। इनके बाद श्री गुरु गोबिन्द सिंघ जी ने जब अपने सेवकों के गुरु दीक्षा दी, भावार्थ यह की अमृत पान कराया तब चार सिद्धांत और दिये जो निषेध है भावार्थ ये कार्य सिक्ख ने नहीं करने है ये चारों कर्म वर्जित है जो ये चार कुकर्म भूल से भी करेगा, वह व्यक्ति सिक्खी से निष्कासित माना जायेगा। वे चार शपथ जो प्रत्येक सिक्ख को पाँच प्यारों द्वारा अमृतपान करते समय दिलवाई जाती है ये है। सर्वप्रथम है केशों का खण्डन नहीं करना अर्थात रोमों को किसी भी प्रकार से नहीं काटना ज्यों के त्यों वैसे ही धारण करने है भावार्थ यह प्रकृति के नियमों का पालन करना (**भाणे में रहना**) हमें केवल केशों का **maintenance** करने का अधिकार है **modification** का नहीं साबूत सूरत मे

प्रकृति द्वारा पुरुष को सौन्दर्य दिया गया है अर्थात ईल्लाही नूर। यह **Natural Beauty & God Gift** हैं, इसे **As it is** रखना है। दूसरा सूत्र है – तम्बाकू का सिक्ख ने भूल कर भी प्रयोग नहीं करना इसके सभी प्रकार के **Product** को गुरुदेव ने जगद् झूठ माना है। तीसरा सूत्र पर नारी अथवा पर पुरुष का संग नहीं करना अर्थात यौन सम्बन्ध नहीं स्थापित करने। गुरुदेव का कथन है जो मनुष्य ऐसा कुकर्म करता है वह मानव गृह कलेश के साथ समाज में चरित्र हनन के कारण कई प्रकार के दंड भोगता है। भावुकता में किया गया क्षणिक अपराध व्यक्ति को कहीं का नहीं रहने देता उसे समाज में बहुत नीचा देखना पड़ता है और सदैव के लिए पाश्चाताप में जलना पड़ता है। चौथा सूत्र है – मांसाहारी नहीं होना। इस के पृष्ठ भूमि में कई कारण है परन्तु यहां हम गुरुदेव द्वारा बताएं गये कारण – दया धर्म का मूल स्रोत है। दूसरा जीवों की हत्या का हिसाब आध्यात्मिक दुनियां में देना पड़ता है। परन्तु सैनिकों को इस शर्त पर छूट दी गई है कि यदि वे लोग किसी विपत्ती काल में मांस सेवन करना चाहते है तो उन्हें जीव की हत्यां उस विधि से करनी चाहिए जिस से उसे कम से कम पीड़ा हो अर्थात झटका भावार्थ एक क्षण में मृत्यु, अब अंतिम सूत्र – सिक्ख ने किसी प्रकार का नशा नहीं करना अर्थात किसी भी प्रकार की भी मदिरा का सेवन नहीं करना।

इस के अतिरिक्त श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का एक विशेष आदेश समस्त मानव समाज के लिए है कि वे मदिरा पान कदाचित न करें क्यों कि इस के सेवन से मनुष्य, मनुष्य नहीं रहता वह शैतान रूप धारण कर के खुराफात करता है। जिस से सभ्य समाज पीड़ित होता है और समाज विरोधी तत्वों को बढ़ावा मिलता है, जिससे भ्रष्टाचार, शौषण और बलात्कार इत्यादि बुराइयां बढ़ती हैं। मदहोश व्यक्ति के सभी कार्य पागलों जैसे होते हैं और वह अपने मूल लक्ष्य से भटक जाता है। इस प्रकार वह परम पिता परब्रह्म परमेश्वर की निकटता प्राप्त करने की अपेक्षा दूरी बनाये चला जाता है।

गुरु ग्रंथ साहिब का निम्नलिखित आदेश है: –

जितु पीतै मति दूरि होय बरलु पवै विचि आय ।।

आपणा पराइआ न पछाणई खसमहु धके खाय ।।

जितु पीतै खसमु विसरै दरगाह मिलै सजाय ।।

झूठा मदु मूलि न पीचई जे का पारि वसाय ।।

(महला 3, राग बिहागड़ा, पृष्ठ 544)

रहिणी रहै सोई सिख मेरा, उह ठाकुर मैं उसका चेरा।

रहित बिना नहि सिख कहावै, रहित बिना दर चोटा खावै।

रहित बिना सुख कबहू न लहै, तां ते रहित सु दृढ़ कर रहै।

यथा

जब लग खालसा रहे निआरा, तब लग तेज दीओ मैं सारा।

जब इह गहै बिपरन की रीत, मैं न करो इनकी प्रतीत।

जगत गुरू नानक देव जी की सुनियोजित प्रक्रिया के परिणामस्वरूप उच्च मानवीय मूल्यों को प्रतिष्ठित करने में समस्त गुरू साहिबान का समान योगदान रहा। जब दसवें गुरू गोबिन्द सिंघ जी ने खालसा पंथ को सम्पूर्ण किया जो उन्होंने उसे न्यारा तथा

अनादि बनाने के लिए कुछ विशेष आदेश दिये, जिस से खालसा पंथ का स्वरूप कभी भी परिवर्तित न हो - **'पूजा अकाल की, परचा शब्द का एवं दीदार खालसा का'** अर्थात एक परमपिता परमेश्वर की पूजा - मार्गदर्शन गुरू ग्रंथ साहब की वाणी का - दर्शन दीदार साध संगत के।

खालसा अकाल पुरख की फौज।।

प्रगटियो खालसा परमातम की मौज।।

भापा जीवन शैली **Life Style**

सिक्ख लोग पंजाब के बाहर अधिकांश व्यापार करते है अथवा उद्योग पति हैं जिस से वे धनाढय हैं। कुछ एक को छोड़कर इनकी आय में कुछ अंश भ्रष्टाचार का भी रहता है। अत: धन की अधिकता के कारण इन की जीवन पद्धति ऐश्वर्य पूर्ण रहती है इनमें अधिकांश लोग विलासता पूर्ण जीवन जीते है। जब ये लोग रात को घर - वापिस लोटते हैं तो इनके पास तंदूरी मुर्गो या मछली इत्यादि होते है, और ये लोग सुरा - सुन्दरी भोग - विलास में रात्रि व्यतीत करते हैं यदि इनके परिवारों में बड़े बजुर्ग इस कार्य को बुरा मानते है तो ये होटलों अथवा ढाबों में अपना शोक पूरा करके देर रात घर पहुँच जाते हैं। पत्नियां तो अधिकांश पति का छाया होती हैं वे भी इसी चाल ढाल में जीवन जीती हैं। अधिकांश पत्नियां प्रात:काल सूर्य उदय होने से पूर्व उठ जाती है क्योंकि उन्होंने बच्चों के तैयार कर के नाश्ता साथ देकर स्कूल भेजना होता है परन्तु सरदार जी सोते रहते है। जब घड़ी की सुइयां 9 या 10 के बीच होती है तब उन्हें उनकी सरदारनी अवाजे दे देकर जगाने का प्रयास करती है परन्तु वह सरदार जी उठने का नाम नहीं लेते। इस पर उनकी पत्नियां उन्हें किक आऊट करती दिखाई पड़ती हैं। जब भापा सरदार जी को एहसास होता है कि मैं बहुत लेट हो गया हूँ तो वे जल्दी - जल्दी में सभी शरीरक क्रियाएं पूरी करते है। जब पगड़ी बांधने की बारी आती है तो वह सोचता है 10 से 15 मिनट और कहां से लाऊ अत: बिना पगड़ी, घर से दूकान अथवा फैक्टरी पहुंचने का प्रयास करते हैं। इस समय वे लोग नंगे सिर बाहर कैसे जाएं इस सब के लिए उन्होंने नये - नये जुगाड़ निकाल लिए हैं। कुछ एक ने सिर पर काली पट्टी की छोटी सी केसकी टाईप पगड़ी बाँधी होती है जो अमृतधारी लोग घर पर रात को सोते समय बांधते हैं। वास्तव में यह न पगड़ी कही जा सकती है न केसकी। इस स्वरूप में वे लोग सिक्ख न दिखाई देकर मुल्लाह - मोलाना इत्यादि दृष्टि गौचर होते है, कहने का अभिप्राय है कि वे लोग ना इल्ल ना ही कुक्कड़ जैसी हालत में होते है। इसलिए उन्हें कोई सरदार जी कह कर सम्बोधन नहीं करता। बात यही समाप्त नहीं होती कुछ तो गुरु आदेशों के विरुद बच्चों वाला पटका बांध कर ऊपर बांदर टोपी डाल लेते हैं। ऐसा जान पड़ता हैं जैसे उनके पिछले बंदरों वाले संस्कार जागृत हो गये है और अब उनको **Reverse gear** लग गया है। कुछ एक ने नया पाखण्ड उत्पन कर लिया है बाजार से सिली हुई एक विशेष प्रकार की टोपी खरीद ली है जिस पर खण्डा छपा हुआ है और खलसा - खालसा हिंदी - पंजाबी तथा अंग्रेज़ी में लिखा रहता है। यदि उन पर कोई अपत्ति करता है कि तुमने सिली सिलाई टोपी क्यों पहनी हुई है तो उन का उत्तर होता है, वीर जी यह तो पटके है ऐसे में उन को पटके और टोपी की परिभाषा बतानी पड़ती है और उन्हें बताना पड़ता है कि कोई शराब की बोतल पर अमृत लिख दे तो वह अमृत नहीं बन जाता ठीक इसी प्रकार टोपी पर खण्डा अथवा खालसा छापने मात्र से वह खालसा नहीं बन जाता। टोपी तो टोपी ही है पटका नहीं। वास्तव में सिक्ख मासूम बच्चों के लिए पटके का अविष्कार किया गया है जो कि उनकी आयु के लिए अनुकूल भी है।

अब फिर लौटते है भापों के घर, जिस दिन अवकाश अथवा रविवार का दिन होता है तो भापा जी तथा उनका परिवार जब तक सूर्य शिखर पर नहीं आता तब तक वे लोग विस्तर नहीं त्यागते उनकी युवा पीढ़ी तो स्मार्ट फोन विस्तर में लेकर उससे अपना मनोरंजन करती रहती है, परन्तु सभी लोग गुरु घर पर अथाह श्रद्धा रखते है अत: वे लोग सुबह का नाश्ता तथा दोपहर का खाना एक ही समय में कर के सीधे गुरु घर जाते है। परन्तु इन लोगों ने गुरमत का अध्ययन नहीं किया होता अत: परम्परागत श्रद्धा के कारण अज्ञानता वश गुरमत विरोधी कर्म करते चले जाते है। इनमें से अधिकांश उन दो नम्बर के संतों के डेरों में पहुंच जाते हैं वहां से अंधविश्वास के चक्रव्यूह में फंसते चले जाते है। ये लोग वहां पर दो नम्बर की माया के खुले गफ्फे भेंट करते है और अपने कूकर्मों को बख्शवाने के प्रयास में जुट जाते है। वहां पहले से ही बगले भक्त शिकार की खोज में दम्भी संतों की वेष-भूषा में इनलोगों की ताक में रहते है। वे लोग इन भापा परिवारों का भव्य स्वागत करते हैं। इन लोगों को अपने चुंगल में फसाने के लिए बहुत सी आलौकिक वार्त्ताएं सुनाते हैं और प्रेरित करते है कि आप अखण्ड पाठ रखवाएं जिस का महत्त्व आप की सभी मनोकामनाएं पूर्ण कर देगा। यूं तो अखण्ड पाठ तथा अन्य कार्यो की भेंट अथवा मोख की सूचियां सभी गुरद्वारों की शोभा बढ़ा रही होती हैं, परन्तु यहां कुछ नये अंदाज में यह सब कार्य सम्पन किया जाता है, जिस से शिकार बने व्यक्ति को अहसास नहीं होता और अंधीश्रद्धा बनी रहती है। अब उन लोगों की रकम ऐठने की युक्ति पर विचार करते है। सर्वप्रथम अखण्ड पाठ की भेंट, कड़ा प्रसाद की भेट, रूमाले की भेंट तथा अगर वह लोग धनाढय है तो उस दिन के लंगर की भेट इत्यादि-इत्यादि। यह सब कुल मिलाकर कम से कम दस हज़ार रुपये रहता है यदि शिकार बड़ा है तो यह रकम दुगनी भी हो सकती है। क्योंकि सभी को दसवंद देने का आदेश है। अत: वे लोग बिल्डिंग फंड इत्यादि के नाम पर संगमरमर इत्यादि के लिए अलग से रसीदे देते है। वैसे तो दो नम्बर के दम्भी संतों के ऐजन्ट बहुत पैनी दृष्टि रखे है, फिर भी वे भापा सरदार जी की गाड़ी का ब्रांड तथा उनकी श्री मती के गहनों को आधार बना कर उनके समक्ष बहुत सी चल रही योजनाओं की लम्बी सूची रखते है फिर उनसे विनती करते है कि आप इस गुरु घर के कार्यो के लिए अपनी सेवा लिखवा दे हम आप को सेवा सूची में नाम लिखवाने का शुभ अवसर देगें। यह युक्ति बहुत कारगर सिद्ध होती है।

अब हम सरदार जी के अखण्ड पाठ के सम्बंध में विचार-विमर्श करेगे। यूं तो सरदार जी जपुजी साहब का पाठ भी नहीं करते क्यों कि उनका कहना है कि मेरे पास समय नहीं है परन्तु पूरे अखण्ड पाठ का महत्त्व खरीदना चाहते हैं। अब डेरावादिओं ने उन्हें कहा है कि अखण्ड पाठ की बुकिंग बहुत है अत: लगभग दो मास के पश्चात आप की बारी आने की सम्भावना है। सिक्खों की आध्यात्मिक दुनियां में कर्म काण्डों व आडम्बरों का बहुत सख्ती से खण्डन किया गया है। इस कार्य के लिए सिक्ख प्रचारक समय-समय गुरुवाणी की व्याख्या करते समय, अनेकों गुरुवाणी के प्रमाणों की झड़ी लगा देते है। परन्तु दीये के नीचे अंधेरा की कहावात अनुसार शिरोमणी गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के हैड क्वाटर अकाल तख्त साहब के पीछे कुछ विशेष कमरों का अतिसुन्दर निर्माण का कार्य किया गया है जिन में भक्तजनों की मांग अनुसार हर समय, चौबीसों घंटे अखण्ड पाठों की लड़ियां सदाबहार चलती रहती हैं। यदि आप को शहीद गुरुबख्श सिंघ निहंग के स्मारक के दर्शन करने का शुभ अवसर प्राप्त होता है तो आप पायेगे कि पड़ोसी कमरों में अखण्ड पाठ अकेले ही पाठी सिंघ कर रहे है-पाठको सुनने वाला कोई नहीं। यह दृश्य तो दिन में है रात्री में आप स्वयं अनुमान लगा ले क्या दशा रहती होगी?

अब प्रश्न उठता है जो पाठ किसी अन्य व्यक्ति के लिए कर्मर्शियल विधि से किया जा रहा हो उसका आध्यात्मिक महत्व क्या है भावार्थ यह कि पाठ करने वाले व्यक्ति का मन, उस पाठ में नहीं, उस का मन कहीं ओर भटक रहा है, क्योंकि मन चंचल होता है वह एकाग्रत नहीं होता, जब पाठी सिंघ का मन पाठ में नहीं, कहीं ओर भटक रहा है तो उस पाठ की क्या महत्त्वता है जब कि गुरुघर के नियमों अनुसार तो मन की हाज़री ही स्वीकारी जाती है। इस का अर्थ हुआ अखण्ड पाठ भी केवल कर्म काण्ड ही है। हां इस आडम्बर से दुकानदारी खूब फलती फूलती है और मूल गुरमत सिद्धांतों को गहरी चोट पहुंचाई जा रही होती है। वह केन्द्र स्थान,

जहां से समस्त पंथ की अगवानी करने की प्रतिक्रिया चलाई जाती हो, वही से गुरमत विचारधारा के विरुद्ध केवल धन एकत्र करने की इच्छा से कौम को गुमराह किया जा रहा हो तो जन-साधारण की क्या दशा होती है, वह तो सोचते है कि जैसे हम पैसे के बल से समस्त बहूमूल्य वस्तुएं खरीद लेते है ठीक वैसे ही धन के बल से हम आध्यात्मिक दुनियां के अखण्ड पाठ भी खरीद सकते है इस कार्य के लिए स्वयं कुछ करने की आवश्यकता नहीं। भावार्थ यह कि अखण्ड पाठ का महत्त्व भी ट्रांसफर (**Transfer**) हो सकता है और हमें मोक्ष इत्यादि आध्यात्मिक दुनियां के फल प्राप्त हो सकते है। अब हम इस समस्त कर्म काण्ड (**पाखण्ड**), आडम्बर जो केवल दुनियावी प्रदर्शन मात्र है की समीक्षा करेंगे। सारांश यही है कि जहां से रहत मर्यादा पर पहरा देने की बात दृढ़ करवानी चाहिए थी वही से सिक्ख जगद् को गुमराह किया जा रहा हो तो विचारने कि बात यह है कि इस बात का क्या समाधान किया जा सकता है। इस बात को मुस्लिम लोग ऐसे कहते हैं। जब काहबे से ही कुफ़फ़र चलाया जाता हो तो आम आदमी की क्या ओकात है कि कुफ्फर के विरूद्ध पर कोई स्टैंड ले सके। खैर- - - - अब इस आधुनिक युग में विज्ञान ने हमें कुछ विशेष सुविधाएं उपलब्ध करवाई है जैसे-इंटरनैट पर श्री गुरु ग्रंथ साहिब के स्वरूप (वाणी) हिन्दी तथा पंजाबी में, हम किसी भी समय इन्हें डाउनलोड करके पढ़ सकते है अथवा वाणी की व्याख्या (अर्थ) इत्यादि पढ़ अथवा सुन सकते हैं।

अखण्ड पाठ

एक समय था जब श्री गुरू ग्रंथ साहिब की हस्तलिखित प्रतियां बहुत कम थी। उनदिनों सिक्ख जगद् अपने अस्तित्व को बचाने के लिए सदैव संघर्ष रत रहता था।

जब भी श्री गुरू ग्रंथ साहिब के दर्शन-दीदार करने का शुभ अवसर प्राप्त होता तो सभी संगत अथवा मिस्लों के यौद्धा लोग कम-से-कम समय में समस्त वाणी को श्रवण करने के लिए अखण्ड पाठ रख लेते और सभी मिल बैठकर एकाग्र मन से अधिक से अधिक गुरु वाणी श्रवण करने का प्रयास करते। क्योंकि न जाने यह अनमोल समय फिर कभी मिले या ना। खैर.......अब इस वैज्ञानिक युग में श्री गुरू ग्रंथ साहिब की प्रतियों की कमी नहीं अत: वह समस्या अब नहीं रही। अत: अब हमें स्वयं गुरुवाणी अध्ययन करने के लिए सहज पाठ रखना चाहिए। अब तो इन्टरनैट पर समस्त वाणी के स्वरूप कई लिपियों में उपलब्ध है। हमें गुरु वाणी पढ़ने के लिए कोई भी अब औपचारिकताएं करने की आवश्यकता नहीं रही। यदि आप गुरूवाणि का किसी भी समय अध्ययन करना चाहते हैं तो **Website : www.sikhworld.info** खोल लिजिए। श्री गुरु ग्रंथ साहिब हिन्दी तथा पंजाबी में बिना किसी ओपचारिकता के पढ़े। इसकी सहायता के लिए वहां पर **main links** में हिन्दी में शुद्ध उच्चारण के लिए गुरुवाणी व्याकरण है। इसके अतिरिक्त वहा पर जपुजी साहब हिन्दी में चार रंगों में है। जो मात्राएं नहीं उच्चारण करनी उनको लाल रंग में जो उच्चारण करनी है उनको हरे रंग में दर्शाया गया है।

गुरुमत के अनुसार आध्यात्मिक दुनियां की प्राप्तियों के लिए गुरुवाणी का पाठ स्वयं करना अनिवार्य है। यदि कोई भूल से या भ्रमित होकर यह सोचता कि पाठ करे कोई और मैं मोल देकर उसके महत्व को खरीद सकता हूँ तो वह अंधविश्वास में जी रहा है।

भापा जी के घर का दृश्य

अब हम फिर से भापा सरदार जी के घर का एक दृश्य देखते हैं आज फिर रविवार अथवा अवकाश का दिन है। सुबह के 10 बजे है किसी ने भी विस्तर नहीं त्यागा। ऐसे में बड़े बुजुर्ग परेशान हो रहे है वे लोग बच्चों को विस्तर त्यागने के लिए प्रेरित कर रहे है और कह रहे है बच्चो आज तो तुम्हें छुट्‌टी है हम से गुरुवाणी का पाठ करना ही सीख लो। इस पर बहू जो भापा सरदार जी के साथ होटल में मुर्गे-मछली खा कर देर रात घर लौटी है, बौखला उठती है और चिल्लाती है, आप क्यों बच्चों को परेशान कर रही है।

इन्होंने कौन सा पाठी (भाई) बनना है जो पाठ करना सीखे। अब भापा जी उठते है और कहते है माता जी इन्हें पंजाबी नहीं आती पाठ कैसे सीखेगे। माता जी:- मैं इन के लिए हिन्दी में गुरुवाणी के गुटके (लघु पोथियां) लाई हूँ उनसे गुरुवाणी पढ़ना सिखाऊगी। बहु-यह इन्हें ना दे। बहू:-ये बच्चे बे-अदबी कर देगें। माता जी- बच्चे बड़े हो गये है परन्तु गुरु वाणी इतिहास आदि कुछ भी तो नहीं जानते, गुरमत सिद्धांतों में बिलकुल कोरे है, केवल श्रद्धा से काम नहीं चलता ज्ञान का होना भी जरूरी है। बहू- मैं इन्हें संध्या समय हर रोज गुरद्वारे भेजती तो हूँ। सास 'माता जी'-वह तो ठीक है परन्तु वहां नित्य प्रतिदिन का कार्यक्रम **(Rautine Work)** चल रहा होता है, अत: कई बातों का इन्हें ज्ञान नहीं हो पाता, इस लिए घर पर इन्हें थरू-प्रापर चैनल **(Throu Proper Chanel)** गुरुवाणी-इतिहास तथा रहत मर्यादा का अध्ययन करवाना जरूरी है। बहू - इन पर पढ़ाई का इतना बोझ रहता है कि इन के पास समय ही कहां है? इस पर ससुर (बड़े सरदार जी):- बेटा ये लोग अपना कीमती समय क्रिकेट देखने अथवा उसकी कमैंट्री इत्यादि। देखने सुनने में व्यर्थ गवा देते है। इन्हें सारी टीमों का नाम याद हैं और फिल्मी सितारों के बर्थ डे (जन्म तिथियां) याद है। याद नहीं तो अपने गुरूजनों के नाम नहीं जानते। बहू-वह भी समय आने पर जान लेगें जल्दी क्या है। बड़े सरदार जी-बिटियां रानी जैसे स्कूलों में सभी **Subject** साथ-साथ पढ़े जाते है, ठीक उसी तरह गुरू इतिहास तथा गुरुवाणी भी आयु के अनुसार सिखाई जानी अनिवार्य है, नहीं तो बच्चे गुरुमत में कोरे होने के कारण बागी हो जाते हैं। यदि गुरमत का ज्ञान होता है तो आज्ञाकारी बने रहते है। जैसे-पोता जसविन्दर सिंघ को ही देख ले-अब बड़ी क्लासों में चला गया है उसके दाड़ी भी उतर आई है परन्तु पगड़ी ना बांधकर बच्चों की तरह पटका ही बांधता है जब मैं उसे पगड़ी बांधने के लिए प्रेरित करता हूँ तो दाये-बाये छिपकर बंदर टोपी पहन लेता है। मुझे तो ऐसे जान पड़ता है कि उसके भूतपूर्व बंदरों वाले संस्कार जागृत हो गये है और वह एक सरदार का बेटा तो दिखाई नहीं देता, जिसे कोई सरदार जी कह कर संबोधन करे जब वह घर लोटता है तो मुझे ऐसे दिखाई देते है जैसे कोई फोर्थ क्लास **(Fourth Class)** का सफाई कर्मचारी चला आ रहा है। बहू-स्कूल जाना होता है इसलिए पगड़ी नहीं बांध पाता। बड़े सरदार जी- बहू हम भी इस आयु से गुज़रे है, मैं सुबह जपुजी साहब का पाठ कर के और पगड़ी बांधकर स्कूल जाता था, मुझे तो सुन्दर पगड़ी बांधने के पुरस्कार भी मिले है। असल बात तो यह है तेरी ज़्यादा पुच-पुच ने बच्चे बिगाड़ दिये है ये लोग सुबह कैसे उठेगे, जबकि ये लोग देर रात तक **T.V.** पर नाटक-चेटक देखते रहते हैं। बहू-बच्चों के स्वस्थ्य के लिए खेल मनोरंजन भी तो चाहिए ना। बड़े सरदार जी वह सब तो ठीक है परन्तु इस का अर्थ यह नहीं की हम अपनी मर्यादाएं अथवा पहचान ही भूल जाए। बहू-पिता जी मैं तो अपने कर्त्तव्य पूर्ण करते हुए आप की आज्ञानुसार संध्या समय बच्चों को प्रतिदिन गुरुद्वारे अवश्य ही भेजती हूँ। बड़े सरदार जी **(ससूर)**-बहू रानी, वह सब ठीक है परन्तु वहां बच्चे केवल माथा टेक कर लोट आते है यह कार्य तो हाज़िरी लगवाना ही हुआ, कुछ अध्ययन करना नहीं, जब बच्चे वहां घंटा-आधा घंटा एकाग्र होकर कुछ सुनेगे नहीं तो वहां से क्या प्राप्त कर सकते है? मान लो यही नोटंकी ये लोग स्कूली शिक्षा के लिए भी करें, स्कूल जाकर केवल हाज़िरी लगवाकर लौट आये, वहां बैठ कर अध्यापक से सलेब्स अनुसार कुछ ना सीखे बस्ता पीठ पर उठाएं केवल घूमते रहे, किताबों का अध्ययन न करें, तो क्या ये पास हो जायेगे? वहां तो चार-पांच घंटे प्रतिदिन एकाग्र होकर अध्ययन करना अनिवार्य है और कुछ बच्चे ट्यूशन भी लेते है ताकि मौरिट लिस्ट में आ जाएं परन्तु आध्यात्मिक दुनियां में तुम सोचती हो कि बच्चों को पाठ करने के लिए गुरुवाणी की पोथी **(गुट्टका)** आदि न दे गुरुवाणी की बे-अदबी हो जाएगी। यदि बच्चों ने पाठ सीख लिया तो पाठी अथवा ग्रंथी बन जायेगे यह तुम्हारी भूल है। जब बच्चे बड़े हो जाएंगे तो केशों की बे-अदबी अज्ञानता वश कर देगें तो क्या करोगी?

पगड़ी

यदि सिक्ख समाज चाहता है कि उनके बच्चे सुन्दर पगड़ी बाधे और पगड़ी बाधने में कोताई न करें तो उन्होंने चाहिए कि समस्त स्कूलों में एक आध्यादेश जारी करवाए जिस अनुसार सिक्ख बच्चों को छटी कक्षा से पगड़ी अनिवार्य कर दी जाए। इस प्रकार बालक बच्चन में ही पगड़ी बाधने में निपुण हो जाएगे।

नोट : यह घरेलू दृश्य मैंने अपने घर का चित्रण किया है किसी अन्य का नहीं अत: कोई इसे किसी विशेष बिरादरी पर व्यंग न समझे – **धन्यवाद।**

सत्य भी है

नास्तिक तथा क्म्युनिष्ट लोगों ने जब सभी प्रकार के धर्मकर्मो में पाखण्ड देखा तो वे लोग कह उठे। धर्मकर्म एक प्रकार के अफीम के नशे के समान है जिसे लग जाती है उससे छूटती नहीं। उनकी अपनी दृष्टि है उन्होंने जो देखा – समझा वही लिखा। वास्तव में पाखण्ड का प्रसार बहुत अधिक है। इस का यह अर्थ कदाचित नहीं की सत्य कहीं है ही नहीं सत्य तो है परन्तु दुर्लभ है खोजने से मिलता है। क्योंकि यह आंतरिक यात्रा है। इसके लिए चरित्र निर्माण अनिवार्य है।

आध्यात्मिक दुनियां की प्राप्तियों के लिए दो स्तम्ब है। पहली है सेवा और दूसरी है प्रेमा – भक्ति। जो जिज्ञासु इन दोनों को अपने जीवन में अपना लेते है वे जिज्ञासु स्वयं को प्रभु के निकट पाता है। क्योंकि सेवा का क्षेत्र बहुत विशाल है इस में वे सभी दीन – दुखी समस्त वर्गो के लोग आ जाते है। ठीक इस प्रकार प्रेमा – भक्ति का क्षेत्र भी बहुत विशाल है इसमें समस्त जगद् के प्राणी मात्र आ जाते है। बस मनुष्य को बिना भेद भाव सभी प्राणी मात्र में उस प्रभु की अंश देखना है। और प्रेम ही प्रेम बांटना है। ऐसा करने वाले को कहीं ओर भटकने की आवश्यकता नहीं रहती। उस का तेज प्रताप बढ़ता चला जाता है।

जैसा अन्न तैसा मन

गुरमत सिद्धांत अनुसार समस्त सिक्ख जगद् को अपनी आय के साधनों में भ्रष्टाचार का अंश मात्र भी नहीं रखना हैं गुरू आदेश है आय के साधन विशुद्ध होने चाहिए। यदि कोई व्यक्ति भ्रष्टाचार के साधनों द्वारा सम्पति संग्रह करता है तो यह गलत धन – संपदा उसी की शत्रु बन जाती है। जो बच्चे इस का प्रयोग करेगे, धीरे – धीरे उनकी बुद्धि मलीन हो जाती है और वे बच्चे माता – पिता के आज्ञाकार नहीं रहते और वे परोपकारी, सेवा भाव वाले न होकर स्वार्थी बन जाते है परन्तु जो लोग धर्म की किरत **(परिश्रम से)** आय कमाते है ठीक इस के विपरीत उनके बच्चे कर्त्तव्य पालक, मधुर भाषी और मिलनसार, लोक प्रिय बने रहते हैं। वास्तव में आध्यात्मिक दुनियां का सिद्धांत है, **''जैसा अन्न तैसा मन''**। जब मन में विकार उत्पन हो जाए तो स्वाभाविक ही है स्वार्थ के कारण ग्रह कलेश उत्पन होगा ही, जिस से सहज जीवन न रहकर सदैव तनाव पूर्ण वातावरण बना रहेगा। ऐसे में बहुत से शरीरिक रोग भी उत्पन हो जाते है क्योंकि रोगों का मुख्य कारण मानसिक तनाव ही रहता है। कुछ रोगों का कारण धनाढय होने के कारण **'जुबान का चटूरा तथा हड हराम'** होना भी होता है भावार्थ यह कि विलासिता पूर्ण जीवन जीने के कारण अधिक खाना, तथा शारीरिक परिश्रम न करना भी होता है जिस से उच्च रक्तचाप तथा मधुमेय हो जाना तो एक साधारण सी बात है। ऐसे में डाक्टरों की शरण में जाना विवशता बन जाती है, जैसे कि आप सभी जानते है आज के छल व कपटी डाक्टर धन ऐठने के चक्कर में ऐसे – ऐसे चक्र व्यूह रचते है कि कमीश्न ऐजंटों द्वारा शौषण बाज़ी शुरू हो जाती है उन का विचार होता है कि अब मुर्गा हाथ लगा है। इस प्रकार भ्रष्टाचार का धन – भाव यह कि चोरी का माल मोरी में चला जाता है। बात यही समाप्त नहीं होती। अकसर भ्रष्टाचार से धनाढय होने के कारण अभिमानी मन नम्रता त्याग कर बिना कारण अन्य लोग से पंगे लेते है जिस का परिणाम मुकदमे बाजी में कोट – कचहरी के चक्कर लगाने पड़ते है, जिस से वहां पर ताक लगाएं बैठे काले कोट वाले खाल उधेड़ लेते है, यदि मुकद्दमा फौज़दारी है तो रही सही कसर पुलिसकर्मी शौषण बाज़ी में कर लेते हैं इस लिए इस विषय को किसी शायर द्वारा रचे एक उर्दू के शेर से समाप्त करते हैं –

खुदा महिफूज़ रखे इन तीनों बलाओं से ।।

वकीलों से हकिमों से और पुलिस की निगाहों से ।।

जो लोग गुरुमत सिद्धांतों पर पहरा न देकर भ्रष्टाचार से अपना नाता जोड़ते हैं उन का धन दुष्ट लोग ऐठ लेता है इस के बदले उनके हृदय में अशान्ति, मानसिक तनाव, गृह कलेश, शारीरिक रोग इत्यादि मिल जाते है। सिद्धांत है: -

संतोषम – परम सुखम।

हिन्दू जीवन शैली का प्रभाव

यूं तो सिक्ख (**गुरमत**) सिद्धांत इस्लाम के साथ बहुत समानता रखते हैं परन्तु सिक्ख परिवारों की जीवनशैली पर हिन्दू सभ्यता का प्रभाव अधिक दिखाई देता है। इसके कई कारण है पहला - हमारी सामाजिक सांझ है, एक दूसरे के घरों में उन के समारोहो में सम्मिलित होते है। दूसरा - अधिकांश सिक्ख लोगों का नाता कभी न कभी हिन्दू धर्म - कर्मो से था। पहले - पहल वे सहजधारी सिक्ख बने तद्पश्चात उन्होंने अपना एक - एक बेटा गुरू को अर्पित कर के उसे सिंघ सजाया। इस प्रकार उनके परिवारों के संस्कार परम्परागत सिक्ख धर्म में भी दिखाई देने लगे। यह घटना उन दिनों की है जब पंजाब में 'सिंघ सभा लहर प्रारम्भ नहीं हुई थी। जब न्यारे खालसे की बात चली तो भई काहन सिंघ जी ने एक पुस्तक लिखी 'हम हिन्दू नहीं,' तो जागृति का आंदोलन चला जिस से बहुत क्रांतिकारी सुधार हुए परन्तु हमारी माताऐं - बहने अज्ञानता वश वे पुराने संस्कार त्याग नहीं पाई। उस समय के चिंतक बलराज साहनी जो कि उनदिनों फिल्मी कलाकार के रूप में विख्यात थे एक सहजधारी सिक्ख होने के कारण प्रतिदिन श्री गुरू ग्रंथ साहिब की वाणी का सहिज पाठ करते थे। उन का कथन था कि सिक्ख गुरू ग्रंथ साहिब में दर्शाए गये सिद्धांतों के विपरीत जीवन जीते है क्यों कि ये लोग केवल ग्रंथ साहिब के आगे मस्तिक झुका कर अपने को धन्य मान लेते है परन्तु गुरूवाणी पढ़ने का कष्ट नहीं करते। यदि ये लोग प्रतिदिन ग्रंथ साहिब की वाणी स्वयं पढ़े तो वे जान पायेगे कि उनकी जीवन पद्धति गुरु आदेशों के विपरीत है। अर्थात ये लोग गुरू आदेशों का घोर उल्लंघन करते पाये जाते है।

मैं यहां कुछ एक छोटी - छोटी त्रुटियां पर ध्यान आकर्षित करता हूँ, जो प्रत्येक सिक्ख अज्ञानता वंश आज भी करता चला आ रहा है। सर्वप्रथम मैं अपने ही घर के बुजुर्गो की बात - बताता हूँ मेरे पिता व माता अमृतधारी कट्टर सिक्ख थे परन्तु मैंने उन्हें कुछ ऐसे कार्य करते हुए बचपन में देखा है जो कि गुरमत सिद्धांतों से कोई मेल नहीं खाते उदाहरण के लिए - दिवाली की रात थाली में चांदी के सिक्के अथवा करेन्सी नोट रखकर केसर के छीटे देकर गुरवाणी की 'आरती' वाले शब्द पढ़ने जो कि वास्तव में लक्ष्मी पूजा है, किया करते थे। यही कार्य मैंने अपने नानिहाल में भी देखा, मेरे मामा लोग भी ऐसा ही करते थे। जब मैं बड़ा हुआ तो मैंने इन गुरमत विरोधी कार्यो पर आपत्ति की तो मुझे उत्तर मिला ऐसा हमारे पूर्वज अथवा पुरखे किया करते थे, हमारी पुरानी प्रथा चली आ रही है।

लक्ष्मी

आश्चर्य की बात यह है कि जो लोग लक्ष्मी की पूजा करते हैं वे सभी गरीब और कंगाल है परन्तु वे लोग जो पश्चिमी देशों में निवास करते है, लक्ष्मी नाम की देवी को जानते भी नहीं हम से कहीं अधिक सम्पंन समृद्ध है? तात्पर्य यह कि अज्ञानता वश कुछ ऐसे कार्य है जो परम्परा के नाम पर माता बहन करती चली आ रही है। इसका सीधा सा अर्थ है कि इन लोगों ने श्रद्धा वश

अमृत पान किया है परन्तु रहत मर्यादा (**आचार संहिता**) नहीं पढ़ी। इस का दुसरा ज्वलंत उदाहरण रक्षा बंधन का त्यौहार है। शायद ही कोई ऐसा सिक्ख घर होगा जहां यह त्रुटी डेरा डाले न बैठी हो, क्योंकि हमारी माता-बहनें जागृत होना नहीं चाहती, वे देखा देखी यह सब करती है। जब किशौर अवस्था में धागा अथवा मौली बांधने का गलत संस्कार मिले तो यह क्रिया परम्परा दिखाई देती है जब कि यह गुरुमत विरोधी आचरण है इस '**मिल गौबा**' (**खिचड़ी**) जीवन पद्धति पर अलग से एक विशेष किताब लिखी जा सकती है। परन्तु मैं यहां मुस्लिम जगद् की बात बता रहा हूँ। एक व्यक्ति ने इस्लाम स्वीकार किया तो उसे शरह के नियम सीखने थे वह मोलवी के पास गया और कहा मुझे शरह के मुख्य नियमों से अवगत करवा दे। इस पर मोलवी बोला जो कार्य हिन्दू करते है जिस प्रकार करते है ठीक उनके विपरीत कार्य करना यही शरह है। वास्तव में मोलवी उसे न्यारे रहने की सलाह दे रहा था।

हमें बच्चों तथा किशौरों को बताना चाहिए कि हमारी रक्षा अकाल पुरख सदैव अंग-संग रह कर, कर रहा है इसलिए हमने उसकी याद में गुरुदेव द्वारा दिया गया कड़ा पहना हुआ है। यह कड़ा, धागे अथवा मोलियों से हज़ारों गुना शक्तिशाली है जो हमें मनोबल प्रदान करता है कि वे परमपिता सदैव हमारी रक्षा हेतु हाज़र-नाज़र है।

अब मैं उन संस्कारों की बात करता हूँ जो हमें पूर्वजों से परम्परा के नाम पर उनके हिन्दू होने के कारण मिले हुए हैं- जैसे एक सिक्ख गुरुद्वारे में प्रवेश करता है, तब वह सर्व प्रथम निशान साहब (**खालसे का केसरी ध्वज**) को माथा टेकता है। यह बात उचित जान पड़ती है क्योंकि सिक्ख परम्परा में निशान साहब खालसा पंथ का प्रतीक हैं। हमारी परम्परा में गुरू ग्रंथ तथा गुरू पंथ दोनों आदरणीय है। सिक्ख सेना जब कहीं भी प्रस्थान करती है तो वे लोग सर्व प्रथम गुरू ग्रंथ साहिब की गाड़ी तथा केसरी निशान साहिब लिए आगे बढ़ते है।

निशान साहिब (केसरी ध्वज)

वर्तमान में संगत निशान साहिब को माथा टेकती है। यह बात उचित जान पड़ी है क्योंकि वे सिवलियन है उन्हें सल्लूट करना नहीं आता परन्तु अंधविश्वास में कुछ माता-बहने वहां पर सिक्के अथवा फल-फूल रखती है, बस यही से गुरुमत विरुधी कार्य प्रारम्भ हो जाता है। क्योंकि बात यही समाप्त न होकर आगे पाखण्ड अथवा कर्म काण्ड में परिवर्तित हो जाती है जैसे कुछ एक महिलाएं दूध की थैली को पानी में मिला कर निशान साहिब का थड़ा धोती रहती है। यदि वे सरफ इत्यादि से थड़ा साफ करती तो ठीक बात थी परन्तु दूध व्यर्थ नष्ट करना यह कहां की गुरमत है। मेरे कहने का तात्पर्य यही है कि बहुत से कार्य बिना सोचे समझे अंधविश्वास में होते है। जबकि गुरदेव सावधान करते हुए कहते हैं:-

अकली साहिब सेवीएं अकली पाईऐ मानु ।।

अकली पड़ि कै बुझीऐ अकली कीचै दानु ।।

नानकु आखै राहु एहु होरि गला सैतानु ।। (पृष्ठ : 1245)

यथा

भाई रे गुरमुखि बुझे कोइ ।।

बिनु बूझे करम कमावणे जनम पदारथु खोइ ।। (पृष्ठ-33)

यथा

सबसै उपरि गुर सबद बीचारु ।।

होर कथनी बदउ न सगली छारु ।। (पृष्ठ-904)

ज्ञान के बिना श्रद्धा अधूरी है

आध्यात्मिक दुनियां में ज्ञान और श्रद्धा दो पहलू है इनका होना एक सिक्ख अथवा भक्तजन में अनिवार्य है, नहीं तो कभी भी व्यक्ति को आचरण से गिरते देर नहीं लगती क्योंकि वह अज्ञानता वश डग मगाता है और रसातल में चला जाता है। साधारणत: हमारे बच्चों को गुरमत का ज्ञान घरों से नहीं मिल पाता केवल श्रद्धा का पाठ ही पढ़ाया जाता है तद्पश्चात स्कूलों व कॉलेजों से भी न के बराबर गुरमत ज्ञान मिल पाता है। अब रही बात गुरद्वारों की तो वहां सदैव **Routine Work** चल रहा होता है। उससे भी बहुत कुछ सीखने को मिलता है, परन्तु संगत में साधारणत: भक्तजन हाज़िरी लगवा कर अथवा माथा टेक कर चले आते है। स्थिर बैठकर, चल रहे कार्यक्रम को श्रवण करने का प्रयास नहीं करते। आम व्यक्ति वहां पर ओसतन 10 मिनट से 15 मिनट तक ही बैठते है और प्रसाद लेकर घरों को चले जाते है। इस प्रकार वे लोग अपने को धन्यमान लेते हैं क्योंकि गुरूघर पर उनकी हाज़िरी लग गई है। विचारणीय विषय यह है कि यह कार्य उसी प्रकार है जैसे एक विद्यार्थी स्कूल अथवा कॉलेज जाये वहां हाज़री लगवा कर या अध्यापक को फतेह बुला कर लौट आये वहां बैठकर कुछ अध्ययन या श्रवण करने का प्रयास न करे, केवल बस्ता उठाकर घूमता रहे। ऐसे में आप ही विचारे क्या वह विद्यार्थी उस कक्षा में से पास हो सकता है? मेरे कहने का अभिप्राय यही है कि हम सब की जीवनशैली ऐसी ही है। हमें धार्मिक पुस्तके पढ़ने की इच्छा ही नहीं रहती अत: हम किसी भी **Labrary** के सदस्य नहीं है। यदि कोई पुस्तक हमें नि:शुल्क भी दे दी जाए तो हम उसे यह कहकर टाल देते है, कि हमारे पास समय ही नहीं है या हम तो सब कुछ पहले से जानते है जब कि हमारी परीक्षा ले ली जाए तो हम शून्य अंक भी प्राप्त करने की योग्यता नहीं रखते ऐसे में मैं यह कह सकता हूँ हमारे में अधिकाशं लोग ना सिक्ख इतिहास न ही गुरूवाणी तथा रहत मर्यादा इत्यादि के विषय में जानते है। बस अधूरे ज्ञान से केवल श्रद्धा वश सिक्खी धारण किये बैठे है। मैं अब अंधी श्रद्धा तथा अधूरे ज्ञान के यहां कुछ उदाहरण आप के समक्ष प्रस्तुत करत हूँ: - जैसा कि आप जानते ही है एक मंदिर में अनेकों देवी - देवताओं की मूर्तियां स्थापित की हुई होती है। अत: भक्तजन अपने - अपने इष्ट को जल अथवा फूल इत्यादि भेंटकर नमन करते चले जाते है परन्तु अधिकांश भक्तजन बारी - बारी सभी मूर्तियों को नमन् करते चले जाते हैं उनका विश्वास है कि कोई उनसे से नाराज न हो जाये। यही घिसे - पिटे पुरातन संस्कार हमारे सिक्ख समाज में भी आ धमके है: - उदाहरण के लिए अधिकांश सिक्ख प्रकाश मान श्री गुरु ग्रंथ साहिब के समक्ष माथा टेक कर नमन करते हुए आगे बढ़ जाते है। जहां - जहां अन्य स्थानों पर अखण्ड पाठ हो रहा है अथवा गुरू ग्रंथ साहिब का सुख आसन स्थान है वहां पर जा कर पुन: नमन् करते है। उन्हें इतना भी ज्ञान नहीं कि केवल एक बार मुख्य प्रकाशमान स्थान पर नमन् ही सम्पूर्ण समर्पण है।

मैंने एक बुजुर्ग महिला को बहुत गौरव से कहते सुना कि हमारे गुरुद्वारे में सदैव देशी घी की ज्योति प्रकाश मान रखी जाती है आप ही बताये कि गुरमत विचारधारा के समक्ष इस का औचित्य रह जाता है। वह माता कर्म काण्डों को ही गुरमति मान बैठी है जब कि इन बातों का गुरूवाणी में भरपूर खण्डन किया गया है।

हम लोग अंधी श्रद्धा वश ज्योतिषिओं के चक्रव्यूह में फंस कर गुरू घर में झाड़ू, नमक की थैलियां तथा उर्द की दाल के ढेर लगा देते है, जब कि वहां पर आवश्यकता की अन्य सामग्री भी चाहिए थी परन्तु वहां पर हमारा ध्यान ही नहीं जाता। ना जाने इन कर्म काण्डों से सिक्ख पंथ का कब पिंड छूटेगा?

3 अधीं श्रद्धा वश ज्ञानवान सिक्ख भी श्री गुरू ग्रंथ साहिब को कीमती रूमाले भेंट करते देखे जाते है जब कि हम सभी जानते है जो हमने रूमाला भेट किया है यह प्रयोग में नहीं लाया जायेगा तब भी बिना सोचे विचारे यह क्रिया लगातार चलती आ रही है। प्रबंधकों की समस्या यह कि वे विचारते है कि इन कीमती रूमालों का क्या प्रयोग किया जाये क्योंकि उनके पास बे - हिसाब गठरियां रूमालों की बंधी पड़ी सड़ रही है।

वर्तमान में धन की अधिकता के कारण हमारे गुरुद्वारे अतिसुन्दर (**world class**) बन चुके है। गुरु की गोलक का अधिकांश धन संगामरमर पत्थर इत्यादि खरीदने पर ही खर्च किया जाता है। मान लेते है समय अनुसार यह कार्य भी होना ही चाहिए परन्तु प्रबन्धकों का ध्यान केवल इसी बात में रहता है कि अन्य गुरूद्वारों से हमारा गुरद्वारा अति सुन्दर दिखाई दे। बस वे लोग इस कार्य को अपनी सेवा काल की **Output** मानते हैं और फूले नहीं समाते। संगत में कोई भी जागरूक सिक्ख नहीं होता जो उनसे पूछे, कि आपने अपने कार्य काल में कितने लोगों को अमृतधारण करवाया कितने बच्चों को गुरमत विद्या उनकी वार्षिक छुट्टियों में दी गई अथवा सिक्खी प्रचार-प्रसार के लिए कोई **Booklets** किसी विशेष गुरूपर्व पर प्रकाशित करवा कर बांटी गई।

हमारे प्रचार संस्थाओं के संचालक अधिकांश गुरमत ज्ञान से कोरे होते है, यदि कोई उनमें ज्ञान वान दिखाई दे तो भी वह अधूरे ज्ञान का मालिक होता है, क्योंकि उसने कहीं से भी विधिवत गुरमत विद्या प्राप्त नहीं की हुई होती। अत: हमारे पूर्वजों द्वारा खोले गये खालसा कॉलेज अथवा सिंघ सभा गुरुद्वारों का मूल लक्ष्य जो उन्होंने निश्चित किया था आज वह नहीं रहा केवल एक दुकानदारी सी बनकर रह गई है क्योंकि इन दिनों राजनीतिक से प्रेरित लोग धनाढ्य होने के कारण इन संस्थाओं पर कब्जा किये बैठे है। इन लोगों का लक्ष्य गुरमति प्रचार न होकर गुरू की गोलक में कितना धन एकत्र हुआ इस पर केन्द्रित रहता है। मैं यहां आपके संग अपने कुछ एक कडुवे अनुभव सांझे करना जरूरी समझता हूँ। मेरा लक्ष्य था श्री गुरू तेग बहादुर साहब जी की शहीदी का वृत्तांत घर-घर कम से कम दो भाषाओं हिन्दी तथा पंजाबी में अवश्य ही पहुँचानी चाहिए। अत: मैं शहीदी वृत्तांत का प्रिंट **'खरड़ा'** लेकर कई गुरद्वारा प्रबंधक कमेटियों के पास पहुंचा और उन से अनुरोध किया कि कृप्या आप इसे आपने गुरुद्वारे के नाम से प्रकाशित करवा ले परन्तु मेरी बात को किसी ने स्वीकार नहीं किया अंत में मेरे अधिक दबाव डालने पर **सैक्टर – 34** के प्रधान साहिब ने यह कह कर स्वीकृति प्रदान कि यदि हमारे ग्रंथी जी इसे पारित कर देते है तो आप छपवा लो हम बिल दे देंगे। परन्तु उन्होंने एक ही भाषा पर सहमति दी। दूसरी भाषा में छपवाने के लिए मैंने सैक्टर-37 के प्रधान से अनुरोध किया कि आप इसे छपवाने में सहायता करें, क्यों कि मैं सैक्टर -37 का निवासी हूँ अत: प्रधान जी ने मेरे दबाव में सहमति दे दी। यहां भी वही शर्त थी कि हमारे कथा वाचक से इसे **Pass** करवा ले। मैंने ऐसा ही किया और **Booklets** पर गुरुद्वारों का नाम लिखवाकर प्रकाशित करवा दी। जब मैंने दोनों प्रधान के समक्ष बिल रखा तो वह अपने वायदे से मुकर गये। सैक्टर 34 का प्रधान तीन हजार का बिल देना चाहता था परन्तु सचिव नहीं माना दोनों में मतभेद हो गया। अत: मुझे वह रूपये अपनी जेब से देने पड़े। रही बात सैक्टर 37 के प्रधान की तो उसने कहा-मैंने तो माना था परन्तु मेरी कमेटी नहीं मानती। इस पर मैंने कहा-ठीक है आप धनाढय है आपना वचन पूरा कीजिए अपने दसवंद मैं से दे दीजिए परन्तु वह बोला मैं क्यों चट्टी भरू। इस प्रकार उस पुस्तिका प्रकाशन का पूरा भार मुझे ही उठाना पड़ा। इस घटना को लगभग पांच वर्ष हो गये है फिर मैंने इन लोगों का कभी मुंह नहीं देखा। गुरू का कार्य गुरू स्वयं करवा लेते है परन्तु जिन लोगों का यह कार्य कर्त्तव्य बनता है वह सोते रहते हैं या जग दिखावों में गुरू घर का धन व्यर्थ नष्ट करते हैं।

मैंने लगभग एक वर्ष पहले दिल्ली गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी को 'जीवन वृतांत श्री गुरू नानक देव जी **हिन्दी में 450 पृष्ठ का प्रिन्ट आऊट (खरड़ा)** दिया, इसके साथ सिक्ख इतिहास हिन्दी, पंजाबी दोनों भाषाओं में बंदा बहादुर से लेकर स्वतन्त्रता तक **पृष्ठ – 700 – 700** में **Pen Drive** में दिया। परन्तु वे आज तक कई बहाने बनाकर टाल-मटोल करते चले आ रहे है, परन्तु उनके पास दिल्ली के दस इतिहासिक गुरुद्वारों के लिए सोने की पालकियों के लिए अपार धन हैं।

वर्तमान समय में नगर कीर्तनों की बाढ आई हुई है प्रत्येक गुरुद्वारा साहिब अपने यहां से एक नगर कीर्तन निकालने के लिए सांझी कमेटी से स्वीकृत्ति प्राप्त कर लेते है और बड़ी धूम-धाम से नगर कीर्तन (**शोभा यात्रा**) निकालते है। इस में दर्शनार्थियों के लिए बहुत से स्थानों पर भांति-भांति के व्यंजनों को बांटा जाता है परन्तु कोई जिज्ञासु प्रश्न कर दे कि आप यह शोभा यात्रा इस

संदर्भ में निकाल रहे है तो किसी कि पास उत्तर नहीं रहता क्यों कि नगर कीर्तन कमेटी ने कार्यक्रम के विषय में कोई बैनर किसी भी भाषा में तैयार नहीं करवाया होता, लोग बस यूं ही लड्डू- इत्यादि व्यजनों का सेवन करके चलते बनते है। वास्तव में गुरुद्वारा कमेटियों का लक्ष्य प्रचार-प्रसार न होकर गोलक इक्ट्ठी करना होता है।

सिक्ख जीवन पद्धति में सैनिक दृष्टि कोण है।

श्री गुरू नानक देव जी ने जब सिक्ख धर्म (सम्प्रदाय) की आधारशिला रखी तो उन्होंने सिक्ख की जीवनशैली को सिद्धांतों पर पहरा देने के लिए गुरुवाणी की विचारधारा पर जीवन यापन करने का प्रावधान बनाया और सिक्खी को मर्यादित कर के न्यारापन दिया। समय अनुसार अन्य गुरूजनों ने इस बात पर पहरा देते हुए अपने न्यारे पन को स्थाई रखने के लिए लगातार कार्य किये। अंत मैं श्री गुरू गोबिन्द सिंघ जी ने खालसा पंथ की सृजना के अभियान की सम्पूर्णता करने पर एक विशेष नियमावली 'रहत मर्यादा' खालसा पंथ को दी जो कि सिक्ख को अनुशासित रख सके, जो उसे डगमगाने न दे। विश्वास और दृढ़ता के संगम में एक सैनिक दृष्टि कोण है उन्होंने इस बात का इस प्रकार प्रगट किया।

खालसा अकाल पुरख की फौज ।

प्रगटियो खालसा परमातम की मौज ।।

इस लिए गुरुदेव ने प्रत्येक सिक्ख को सदैव सतर्क (Alart) रहने का आदेश दिया और कहा-जैसे एक सिपाही बिना बन्दूक अथवा शस्त्र किसी काम का नही होता ठीक वैसे ही प्रत्येक सिक्ख को सदा शस्त्रधारी होना अनिवार्य है न जाने विपत्ति कब सिर पर मंडराने लगे। क्यों कि हमारे शत्रु सभी स्थानों में विद्यमान है न जाने कब सामना हो जाये। अत: उन्होंने कहा – **'बिना शस्त्र नर भेड जानों।'** तात्पर्य यह था कि सिक्ख को सदैव शक्ति संतुलन बनाए रखना है। आत्म सुरक्षा के लिए आत्म निर्भर होना अनिवार्य है दूसरों का मुँह नहीं ताकना बल्कि कमजोर वर्ग जो कि दूसरे के अत्याचारों से पीड़ित हैं उनकी सहायता के लिए आगे आना है। कभी भी गफ़लत की नीद नहीं सोना।

परन्तु हमें दुख से कहना पड़ रहा है सिक्ख ने अपने गुरुदेव के आदेशों पर पहरा नहीं दिया। उसे शत्रु पक्ष ने बहका दिया कि हमारे शस्त्र कृपाण, तलवार, भाला इत्यादि पुराने समय के होकर रह गये है अब इन Out of day शस्त्रों की कोई आवश्यकता ही नहीं रही। अब तो आधुनिक शस्त्र होने चाहिए। समस्या यह है हम आधुनिक शस्त्र- अस्त्र खरीदने की क्षमता नहीं रखते और ना ही हमें उन का लाईसैंस मिल सकता हैं। जो हमारे पास शस्त्र परम्परागत थे उन पर हमारा विश्वास उठ गया और हम सुरक्षा के लिए दूसरों के मोहताज होकर रह गये है। इस जहालत का परिणाम तो आपने 1984 के नर संहार के समय देख ही लिया है प्रत्यक्ष को प्रमाण की आवश्यकता नहीं होती।

कृपाण का महत्त्व

मेरी **Posting** गंगटोक (सिक्कम) होने पर मैं **30 अक्टूबर** 1984 ई. को सिल्लीगुड़ी (बंगाल) अपने ट्रांजिट कैम्प में पहुंचा। उस दिन सब ठीक-ठाक था दूसरे दिन 31 अक्टूबर को इन्द्रा गांधी की हत्या हो गई परन्तु मुझे इस दुर्घटना की सूचना

नहीं मिली। मैं दोपहर को सिल्लीगुड़ी नगर घूमने चला गया। तब स्कूली बच्चों को छुट्टी हुई वे मुझे गालियां देते हुए आगे बढ़ गये तब मैं कुछ समझा नहीं पाया। तभी एक बुजुर्ग ने मुझे कहा - सरदार जी आप यहां के रणजीत होटल जाओ। मैंने प्रश्न किया क्या हो गया है? उसने बताया इन्द्रा की हत्या हो गई और वह मुझे वहां छोड़ गया। रात मैंने वही काटी प्रात: काल जब मैं वहां से अपने ट्रांजिट कैम्प के लए निकला तो अभी अंधेरा छठा नहीं था। जब मैं अपने ट्रांज़िट के निकट पहुंचा तो तीन बती मोड़ पर लगभग पांच - छ: युवकों का एक टोला ट्रांजिस्टर से बी.बी.सी का कार्यक्रम सुन रहे थे समय लगभग 6:30 का रहा होगा। वे लोग मुझे देखकर ऊँचे स्वर से कहने लगे वह सरदार आ रहा है तथा मेरी तरफ लपकने के लिए तैयार हो गये। तब मैं भी सतर्क हुआ। मैंने विचार किया यदि मैं वापस लौटता हूँ तो ये लोग मेरा पीछा करेंगे और मुझे मार डालेगे। अब क्या किया जाए। तब मैंने विचार किया **'गुरु मेरै संगि सदा है नाले'** और मन ही मन कहा: - भगवान उसी की सहायता करते है जो अपनी सहायता स्वयं करता है। तब क्या था मेरे में आत्म विश्वास आ गया मैंने तुरन्त बगल में लटक रही कृपाण को धीरे से निकाला और हाथ में मज़बूती से थामे उन्हीं बंगाली युवकों की तरफ बहुत साहस से बढ़ने लगा। तब वे लोग चोके कि यह तो हमारी तरफ बढ़ा चला आ रहा है। वे लोग इस रहस्य के जानने के लिए उत्सुक हुए जैसे ही मैं उनके बहुत निकट पहुंचा मैंने अपनी युनिट की और टर्न **(मुड़ा)** किया और भाग लिया। वे लोग मेरा पीछा करने लगे तभी मैंने उन्हें अपनी कृपाण दिखाई और कहा: - जो तुम में से मुझ पर हमला करेगा उसे मैं यही सदा की नींद सुला दूंगा, फिर क्या था वे भयभीत होकर ठिठम्बर गये। बस मुझे कुछ समय मिल गया, इस पर मैं तीव्र गति से भागता हुआ अपनी युनिट में पहुंच गया।

निम्नलिखित सर्वमान्य सत्य सिद्धांत हमारा मार्ग दर्शन करते है।

1. कोऊ किसहि को राज न दैहि, जो लौहि निजु बल से लैहि।।
2. शक्ति तलवार की धार में से उत्पन होती है अथवा बंदूक की नली से ।
3. जहां शक्ति संतुलन होता है वहां शांति बनी रहती है। नहीं तो शक्तिशाली पक्ष कमजोर को खा जाता है।
4. राज्य शस्त्रों - अस्त्रों की छत्र - छाया में फलते - फूलते है।
5. बिना शस्त्र नर भेड जानों
6. राज बिना न धरम चले हैं, धर्म बिना सब दले - मले हैं।

सभी धर्म अथवा सम्प्रदाय जो भी दृष्टि गोचर हो रहे है **मुस्लिम, इसाई जैन, बौद्ध,** सिक्ख इत्यादि सभी को परिभाषित किया जा सकता है सभी की कोई न कोई पहचान स्पष्ट हो जाती है परन्तु एक हिन्दू लोग है इनकी कोई परिभाषा नहीं और न ही इनकी कोई मर्यादा है जिस के अनुसार यह लोग अपना जीवन व्ययापन करते है। इनमें अनेकों वर्ग हैं जो एक दूसरे की जीवनशैली के विपरीत जीवन जीते हैं जैसे - सनातनी हिन्दू देवी - देवताओं और मूर्ति पूजक है, आर्य समाजी हिन्दू मूर्ति पूजा का खण्डन करता है। तात्पर्य यह कि इन की विचारधारा में परस्पर कोई मेल नहीं। स्वतन्त्रता के पश्चात कलकत्ता नगर में एक हिन्दू सम्मेलन बुलाया गया था जिस में यह निश्चित करना था कि हिन्दू समाज को परिभाषित करे परन्तु वहां कोई भी सहमति न हो पाई अंत में यह निश्चित किया गया कि जो लोग वर्ण आश्रम को मानते है वे लोग हिन्दू हैं।

बात स्पष्ट हो गई सिक्ख लोग तो प्रारम्भ से ही जाति प्रथा वर्ण - आश्रम का पुर जौर खण्डन करते चले आये है अत: यह सिद्ध हो गया कि हम कदाचित हिन्दू नहीं।

RSS (आर. एस. एस.)

वर्तमान में हमें भयभीत किया जा रहा है कि कुछ एक सरकारी संरक्षण प्राप्त ऐसी संस्थाएं व एजेंसियां हैं जो सिक्ख समुदाय को धीरे – धीरे निगलने के प्रयास जारी रखे हुए हैं। उनकी कुछ कारस्तानियां पकड़ में समय – समय दृष्टि गौचर होती रहती हैं। जैसे : – नानकशाही कैलंडर रद्द करवाना, तथा विद्यार्थियों के सलेब्स की पुस्तकों में सिक्ख इतिहास को बहुत भद्दे दृष्टिकोण से प्रस्तुत करना इत्यादि। वास्तव में उनका लक्ष्य हमें हिन्दू घोषित करना है, अत: वे लोग सदैव हमारे न्यारेपन पर आक्रमण करते रहते हैं और हमारी भावी पाढ़ी को **Miss Guide** करके भ्रमित करने की असफल चेष्टा करते रहते हैं। परन्तु वास्विकता यह है कि उनके कई आक्रमण निष्फल होते रहते है बात यह है कि वे लोग श्री गुरू ग्रंथ – साहिब की वाणी में यह एक अक्षर भी परिवर्तित नहीं कर सकते और न ही हमारी रहत मर्यादा (**आचार संहिता**) में किसी प्रकार का हस्तक्षेप करने की शक्ति रखते हैं। वैसे तो हमारे गुरु घर की मर्यादा जो कि सिंघ सभा लहर के समय निश्चित की गई थी उसमें बदलाव करना असम्भव है फिर डर काहे का है?

हां.... यह सत्य है वे लोग अपना सम्पूर्ण बल हमें हिन्दू साबित करने के लिए लगाये बैठे हैं उस कार्य के लिए उन्होंने हमारे राजनैतिक नेतागण जो बिकाऊ और गद्दार हैं खरीद लिए है। परन्तु यह सब **Temporary** (आरज़ी) बाते हैं। समय बहुत बलवान होता है। जैसे बादल छटते देर नहीं लगती वैसे ही इन राजनेताओं का सिंघासन पलटते देर नहीं लगेगी। तक फिर से न्यारा खालसा बुलंदियों पर जयकारे लगाये गा।

कभी – कभी शिकारी खुद शिकार हो जाता है। जैसे ही मानव समाज में जाग्रति आयेगी जब देश के अन्य विश्व विद्यालयों में श्री गुरु नानक देव अथवा श्री गुरु ग्रंथ साहिब की चेयर स्थापित होगी तब दुनियां का सर्व श्रेष्ट सिद्धांत मानव समाज के समक्ष प्रगट होगा तभी लोग गुरुदेव के अनुयायी बनते चले जायेगे और देवी – देवताओं अथवा वर्ण – आश्रम (**जाति प्रथा**) की समाप्ति निश्चित ही है। क्योंकि इनके किसी भी सिद्धांत में दम नहीं हैं।

एक बार भाई मरदाना जी किसी कारण वश दुविधा में थे वह गुरुदेव से कहने लगे। गुरुदेव अब क्या होगा? तब गुरुदेव ने उत्तर दिया: – **भाई जी – करतार के रंग देखो! – वह सब भली ही करेगा!!!**

वर्तमान में आप नित्य प्रति **T.V.** पर तृतीय विश्व युद्ध का **Trailer** देखते रहते है। वास्तविकता यह है कि इस की सम्भावना से मुंह नहीं मोड़ा जा सकता। खतरा मण्डरा रहा है। कभी कुछ भी हो सकता है। ऐसे में हम कहां खड़े है विचारणीय विषय है

हमारे देश को स्वतन्त्रता गांधी के चरखे से नहीं मिली। भ्रम में मत रहो। वह तो द्वितीय विश्य युद्ध की विभीषिका में आज़ाद हिन्द फौज के सिपाहियों द्वारा अंग्रेज़ों के विरुद्ध लड़े गये युद्ध का परिणाम थी। जिन में **60%** सिपाही सिक्ख जवान थे। भावार्थ यह कि जब भी लोहा गर्म होता है तभी उस पर चोट लगाने का प्रभाव होता है। अर्थात जब भी कोई अंतरराष्ट्रीय घटना क्रम होता है तो दुनियां के नक्शे बदलते है। उनदिनों केवल भारत को ही आज़ादी नहीं मिली बल्कि बहुत से देशों ने अंग्रेज़ों, फासीसियों तथा पुरतगालियों की गुलामी से स्वतंत्रता पाई है।

भविष्य वाणी

हज़रत मुहम्मद साहिब पराजित होकर मक्के से मद्दीने प्रस्थान कर गये थे वहां उन्होंने इस्लाम का फिर से प्रचार किया जो सफल रहा तद्पश्चात उन्होंने सैन्य तैयारी कर के मक्के पर आक्रमण किया और विजयी रहे। इस पर उन्होंने काबे से सभी प्रकार के

बुत (**मुर्तियां**) ध्वस्त कर दी और सिंघा अस्ब की स्थापना की। यह समय सन् 622 ई. था। तब उन्होंने सम्वत हिज़री की घोषणा करते हुए इस्लाम की स्थापना का पर्व मनाया। तभी उन्हें अकाश वाणी हुई कि 1400 वर्ष तक ही आप का तेज प्रताप बना रहेगा। अब यह समय-काल (**Solar System**) के अनुसार **2022** के अंत में पूर्ण होने जा रहा है। ऐसा इस्लाम के विद्वान लोगों का मानना है।

तद्पश्चात सन् **2023** में खालसा जगत समस्त विश्व में छा जाएगां और कई देशों में केसरी निशान झूलेगा।

सिक्ख समाज की युवा पीढ़ी

सिक्ख सम्प्रदाय की युवा पीढ़ी पतन की ओर क्यों अग्रसर हो रही है? इस बात का सीधा सा उत्तर है अज्ञानता वश वे लोग सिक्खी त्याग रहे है क्यों कि उनको अपने पूर्वजों का इतिहास तथा गुरवाणी का हमने अध्ययन नहीं करवाया। नहीं तो वे लोग हम से भी अधिक अपने को गौरवान्वित मानते और सिक्ख पर पहरा देते। परन्तु इसका एक दूसरा पक्ष भी है: सिक्खी जीवन पद्धति को एक सैनिक दृष्टिकोण से तैयार किया गया, जिस में सदैव सतर्क रहना है इस फलसफे में कहीं भी आलस्य की गुंजाइश नहीं, एक सिक्ख का उठना बैठना, सोना-जागना समय अनुसार होना अनिवार्य है। खान-पान में भी परहेज होना अनिवार्य है। तात्पर्य यह कि सिक्खी कमाना अपने को बंधनों में बांधना है। लोग तो सभी नियमों को ताक पर रखकर बागी होना चाहते है और वह लोग पड़ोसी हिन्दू लोगों को देखते है जिन पर किसी भी प्रकार की कोई 'आचार संहिता' लागू नहीं होती वे मन-माना जीवन जीते है। इस बात को हम इस प्रकार समझ सकते हैं। जैसे-एक पलटन के जवान सदैव अनुशासित रहते हैं और सदैव सतर्क रह कर आज्ञा का पालन करते हैं। इस के विपरीत सिवलियन लोगों का जीवन अनुशासित न होकर मन मौजी रहता है वहां कोई नियमावाली नहीं होती और न ही किसी को समय के बधनों का एहसास है बस व्यर्थ में समय नष्ट करना और भोग-विलास ही उन का उद्देश्य होता है। ऐसे में आप ही बताऐं कौन, सैनिक अथवा देश भक्त सिपाही बनना पंसद करेगा? क्योंकि अधिकांश लोगों की विचारधारा 'मिल **गौबा**' (**खिचड़ी**) जीवन जीने की है। ऐसी परिस्थितियों में सिक्खी के आदर्श मार्ग से मुँह मोड़ने वालों की संख्या बढ़ती ही जा रही है। परन्तु यह बात गांठ बांध लो जो आदर -सम्मान और प्राप्तियां एक सैनिक को होती है, वह सिविलयन को नहीं!!!

जैसो राजा – तैसो प्रजा

इतिहास के विद्यार्थी जानते है कि **Anglo Sikh War** सन् **1847** ई. में अंग्रेज़ जरनैलो ने स्वीकार किया हम कद्ाचित विजयी नहीं हो सकते थे। यदि सिक्ख सेना के नेतृत्व कर रहे कमाण्डर गद्दार और बिकाऊ न होते।

सन् 1920 से सिक्खों ने वे सभी मोर्चे (**आंदोलन**) विजयी किये जो उन्होंने अंग्रेजों के विरुद्ध चलाए थे। क्योंकि उस समय नेतृत्व कर रहे नेतागण पवित्र आत्मा वाले और समर्पित लोग थे।

वर्तमान में ठीक इसके विपरीत वे लोग सिक्ख समाज का नेतृत्व कर रहे है जो वास्तव में पंथ दोखी (**दुष्ट**) है। केवल उन्होंने मुंखोटा सिक्खों वाला लगा रखा है। उनकी शक्ल-सूरत सिक्खों जैसी है, परन्तु अकल शत्रु गुटके **R.S.S.** ग्रुप जैसी। एक दम स्वार्थी और बिकाऊ। उनका काम ही पंथ की पीठ में छूरा मारना है, और शत्रु के संकेतों पर सिक्ख समाज को समाप्त करना है।

सर्व प्रथम वर्तमान काल के मुख्य मंत्री कैप्टन अरमिन्दर सिंघ को लेगे। इनके पूर्वजों ने अकाली आंदोलन के समय पंथ के साथ बहुत द्रोह (**शुत्रता**) कमाई। यह लोग अंग्रेज़ों के पिटठू बने हुए थे। शिरोमणि कमेटी और इनमें ईट-घड़े का बैर सर्व विदित है। कहने का भावार्थ है यह गद्दारों की अंश है। यह लोग कुर्सी के लिए नीचे से नीचे गिरते चले जाते है, इनका कोई ईमान

है ही नही। रही बात बादल परिवार की तो इनके इतिहास में भी गद्दारी है इनके पूर्वज साधारण किसान थे जिन्होंने अकाली आंदोलन में शहीदी जत्थे के लिए स्थानीय देहातियों द्वारा तैयार किये गये खाने में विषमिलाई थी। जिस से प्रसन्न होकर अंग्रेजों ने इन्हें बहुत सी भूमि उपहार में देदी अब हम वर्तमान की बात करते है:- सन् 84 ई. में श्री दरबार साहिब पर भारतीय सेना का आक्रमण प्रकाश सिंह बादल की मिली भक्त से हुआ था। सन् 1978 ई. अमृतसर में नकली निरंकारियों द्वारा 13 सिघों की शहीद करने की घटना इन लोगों की शह पर हुई थी। इनके काले कारनामों पर तो कई किताबें लिखी जा रही है, परन्तु फिर भी कुछ मुख्य घटनाएं जो आप जानते ही है वे इस प्रकार है:- सर्व प्रथम शिरोमणि कमेटी पर कब्जा करना, दूसरा-अकाली दल को व्यक्तिगत दल के रूप में विकसित करना, तीसरा-सभी कार्य आर. एस-एस के संकेतों पर कर के सिक्ख सिद्धांतों को समाप्त कर मिलगौबा जीवनशैली का प्रचलन करना, पंजाब की युवा पीढ़ी को नशों का आदी बनाना इत्यादि।

अब आप स्वयं ही विचार करके देख ले, जो बहुरूपिये सिक्खी वेष में हो इन दम्भी सिक्खों से आप क्या आशा कर सकते है जो स्वार्थ के लिए शत्रु के संकेत पर सिक्ख सम्प्रदाय को मिट्टी में मिलाने को तुले हुए हो।

'जैसा राजा तैसी प्रजा' की कहावत के अनुसार अब पंजाब में युवा पीढ़ी में कोई ही केशाधारी साबुत सूरत दिखवाई देता है। इन लोगों की करतूतों के कारण पंजाब से सिक्खी रूठ कर अन्य देशों में चली गई है।

भारतीय संविधान का निर्माता

72 वर्षो से देश एक सूत्र में बंधा हुआ है इसके पीछे भी एक विशेष कारण है। वह है देश का संविधान बनाने वाला डाक्टर अम्बेडकर एक सहिजधारी सिक्ख था। यूं तो उन्होंने बहुत प्रयास किया कि मैं सिक्ख सज जाऊ और अमृतपान करलू परन्तु उस समय के दूसरे हिन्दू राजनीतिज्ञों ने ऐसा होने नहीं दिया, उस का कारण मुख्य यह था कि गांधी, पटेल तथा अन्य राजनेताओं को यह भय सुता रहा था कि यदि ऐसा हो गया तो सभी दलीत वर्ग-सिक्ख हो जाएगे जिस से सिक्खों की जन संख्या करोड़ों में बढ़ जाएगी अत: उनका बोट बैंक उनके हाथों से निकल जाएगा।

डाक्टर अम्बेडकर ने सिक्ख गुरूजनों का इतिहास तथा श्री गुरू ग्रंथ साहिब की वाणी का गहन अध्ययन किया हुआ था।

हमारे पूर्वज और हम

देश के विभाजन के पश्चात पच्छिमी पंजाब से आये एक सिक्ख परिवार की अगामी पीढ़ी के कुछ युवक अपने पूर्वजों की भूमि देखने अपने पुराने देहात में पहुँचे वहाँ पर वे स्थानीय लोगों से मिले। इन में एक बजुर्ग भी था जो कि इन लोगों के दादा का गहरा मित्र था। जब उससे इन की भेंट हुई तो वह बहुत आश्चर्य में था। उसने इन युवकों से उनका परिचय मांगा। जब इन लोगों ने कहा कि हम आपके गहरे मित्र सरदार शमशेर सिंघ के पोते हैं तो उसने फिटकार लगाई और कहा-तुम्हारा दादे के पास अपार धन सम्पदा थी, परन्तु वह केवल धर्म की सुरक्षा के लिए सब कुछ त्याग कर प्रदेश चला गया। परन्तु एक तुम हो कि मुझे सिक्ख मालुम नहीं होते, यदि यही सब कुछ करना था तो फिर अपना वतन छोड़कर जाने की जरूरत क्या थी। खरलानत है ऐसी ओलाद पर जो अपने बजुर्गो के त्याग-बलिदान और धर्म प्यार की भावनाओं को जान ही न सके।

अल्प संख्यक होना

वर्तमान कल में देश के वातावरण में परस्पर ईर्ष्या-द्वेष के कारण काफी कटूता अनुभव होती रहती है। बहू-गिनती के लोग अल्प संख्यों के अभद्र व्यवहार करते है यह बात यही समाप्त नहीं होती वे लोग हमारे किशोर-किशोरियों को कई प्रकार के

मन घढनत बे-सिर-पैर के चुट्टकले व्यंग रूप में सुनाते रहते है जिस से हमारी युवा पीढ़ी हीनभावना से ग्रसित हो जाती है और वे स्वयं को तुच्छ मान् लेती है जब कि बात ठीक इस के विपरीत है हमें अपने बच्चों का मनोबल बढ़ाने के लिए उन्हें वीर रस की इतिहासिक घटनाओं से अवगत करवाना चाहिए तथा उन्हें सदैव चढ़दी काला में रहने के गुर सिखाने चाहिए। जिस से उनमें कुण्ठा **In perior complexity** की भावना ना पनप पाये।

जन-शक्ति

लोक तान्त्रिक चुनाव प्रणाली में जन संख्या (**बहू मत**) का ही बोल बाला रहता है। प्रजातन्त्र के इस सिद्धांत से अल्प संख्यक लोगों का कोई ठिकाना नहीं रहता। उन्हें बहूमत वाले कुचलने के लिए अवसर ढूंढते रहते हैं। देश की स्वतन्त्रता के पश्चात सभी सम्प्रदायों तथा सभी वर्गो की गिनती दुगनी-चौगुनी हो गई है। केवल एक सिक्ख लोग ही ऐसे है जिन की जन संख्या जो स्वतन्त्रता के समय थी आज भी उतनी ही है। बल्कि आंकड़े तो गिनती कम होने के भंयकर संकेत दे रहे है। अब विचारणीय विषय है कि हमारी ही गिनती कम क्यों हुई? उत्तर सीधा सा है सबसे अधिक परिवार नियोजन सिक्ख ने ही अपनाया है। मान लेते है यह बात ठीक है कि परिवार के सदस्यों की सीमा निश्चित करने से परिवार में सुख -सुविधा तथा समृद्धि बनी रहती है, परन्तु अधिकांश दाम्पतिओं ने तो कुछ जरूरत से अधिक ही अपने को संकोच लिया है। उनके यहां एक या दो बच्चे ही है। अब आप सोचे, इस प्रकार तो हमारी संख्या धीरे-धीरे कम होती चली जाएगी क्यों कि यदि तीन बच्चों को एक माता जन्म दे तो ओसतन जन-संख्या वहीं स्थिर रहेगी। वास्तव में होता यह है कि दुर्घटना कहीं-न कहीं घरों में **Mishappening** हो जाती है या कईयों के यहां संतान नहीं होती या केवल एकलोती संतान होती तो इस प्रकार जन-संख्या लगभग स्थिर ही रहती है।

वास्तविकता यह है कि हमारी युवा पीढ़ी ऐसा सोचती है कि बच्चों का पालन-पोषण वे कर रहे हैं भावार्थ यह कि बच्चों के रिज़क-दाता वे हैं अगर वे नहीं होंगे तो बच्चों को भूखा प्यासा रहना पड़ेगा अथवा मर जाएगे। हमारी युवा पीढ़ी अपने को विधाता मान बैठी है उन्हें उस दिव्य शक्ति पर भरोसा नहीं रहा कि वे अदृश्य शक्ति समस्त ब्रह्माण्ड का संचालन कर रही है। वहीं सभी को रिज़क देता है हम तो एक साधन मात्र है। यर्थात यह है कि हम आस्तिक होने का नाटक करते है, वास्तव में ढोंगी है क्यों कि हमें उस प्रभु पर विश्वास है ही नहीं।

जो लोग वोट शक्ति को समझते है वे ऐसी भूल नहीं करते वास्तव में **Strength Power** ही कौमों की शक्ति होती है।

हमारे विवाह समारोह, बैंकिट हाल (Banquet Hall)

हमारी रहत मर्यादा (अचार संहिता) के अनुसार हमें अपने बच्चों के विवाह बहुत सादगी से करना चाहिए थे परन्तु हम है कि अकल के पीछे लट्ठ लेकर घुमते है। गुरमत विचारधारा को ताक में रखकर जग दिखावे का झूठा प्रदर्शन करने के चक्रव्यूह में फंसते चले जाते है और कर्ज़ाई होते जाते है। चलो मान लेते है कई व्यक्ति, बहुत समृद्धि प्राप्त है वह अपने बच्चों के विवाह पर अधिक खर्च करने की क्षमता रखता है तो भी हम सभी सामाजिक प्राणी है हमें समाज में कू-प्रथा को बढ़ावा नहीं देना चाहिए क्योंकि समाज के निम्न वर्ग के लिए यह झूठे प्रदर्शन दिवालिया पन का कारण बन जाते हैं।

हम लोग वर्तमान मे बिना सोचे विचारे पच्छिमी सम्यता की अंधोधुंध नकल करते है। रंगा-रंग कार्यक्रमों के अंतरगत बैंकिट हालों में जो दृश्य देखने को मिलते हैं वह कदाचित भारतीय अथवा पंजाबी परम्परा से कोई मेल नहीं खाते क्योंकि यहां पर हमारी युवा पीढ़ी जिसमें बहू-बेटियां सर्वजनिक रूप में नृत्य प्रदर्शन कर रही होती है। दर्शक के रूप में वहां भांति -भांति के लोग

होते है, जिनमें वे बजुर्ग भी होते है, जो रिश्ते में इन के दादा जी, ससूर इत्यादि होते है। क्या यह दैनीय दशा गुरमत है या इसके विरूद्ध अपराध बस यही से समाज रसातल की दशा में जा रहा होता है। इस समस्या पर जाग्रती लाने वाला अब कोई दिखाई नहीं देता? बल्कि होता यह कि इस प्रकार असामाजिक तत्वों को एक प्रकार का प्रमाण पत्र **(Certificate)** मिल जाता है कि यह अश्लीलता हमारा सभ्याचार हैं जब कि सभी बजुर्ग मन ही मन दुखी होकर ज़माने को कोसते रहते हैं परन्तु उन के बस में कुछ नहीं इस लिए कुड़ते रहते है और वे कह रहे होते है कि यह सभी कार्यक्रम हमारे पतन का कारण बन रहे है!!!

स्वामी अग्निवेष

एक दिन **TV** पर स्वामी अग्नि वेष जी मूर्ति पूजकों से दुखी होकर अपने विचार रख रहे थे। वह बहुत दुखी थे क्योंकि मूर्ति पूजाकों ने उन पर जानलेवा आक्रमण किया था। उस सयम उन्होनें निराशा में एक बात मंच पर मिडिया के समक्ष कही – मैं जो कहता हूँ वही बाते श्री गुरु ग्रंथ साहिब में आप को मिलेगी मैं कोई अलग से नई बात नहीं कह रहा हूँ परन्तु मुझे दुख इस बात का है कि सिख लोगों ने गुरू ग्रंथ साहिब को एक पूजा की वस्तु मान कर पवित्रता के नाम पर रूमालों के अन्दर समेट कर रख लिया है। वे गुरु वाणी का प्रचार – प्रसार नहीं करते नहीं तो इस अधियुनिक युग में इतनी रूढीवादी दकिया नूसी बाते समाज में नहीं होती। मुझे उनकी बातों में बहुत सच्चाई दिखाई दे रही थी। वर्तमान में मुझे यही कड़ूवा अनुभव हुआ।

1 अक्तूबर 2019 गुरुद्वारा हट्ट साहब के सामने सुलतानपुर लोधी में दमदमी टकसाल की तरफ से साहब श्री गुरु ग्रंथ साहिब की वाणी के शुद्ध उच्चारण के लिए संथ्या नये विद्यार्थियों तथा जिज्ञासुओं को देने का कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ इतिफाक से मैं भी वही था अत: इस में सम्मिलित हो गया। संथ्या देने से पूर्व उन्होंने विद्यार्थीयों अथवा जिज्ञासुओं को पवित्रता के नाम पर इतना भयभीत किया और बार – बार कहा गुरुवाणी का कहीं अपमान न हो जाये इसलिए अनेकों पवित्रता बनाये रखने के लिए नियम बताते चले गये। मैं तो पहले से ही गुरुवाणी अध्ययन करने के नियम जानता हूँ परन्तु उनके कठोर नियम सुनकर मेरा पसीना छुटने लगा और मैं अपने को अपराधी जानकर भाग खड़ा हुआ मेरे कहने का अभिपर्य यही है कि जरूरत से ज्यादा सख्ती से नये लोगों का मनोंवल टूट जाता है कि कही कोई गुरु वाणी की बे – अदबी न हो जाये अत: वे संथ्या लेने से भाग खड़े होते है और जीवन भर गुरुवाणी नहीं पढते। इसलिए अज्ञानता वश जीवन गलत कार्यो में लिप्त हो जाते है।

अब विज्ञान ने उनकी दकिया नूसी विचारधारा से हमें युक्ति दिलवा दी है अब प्रत्येक हाथ में समार्ट फौन है उस में इन्टरनेट से गुरुवाणी आडियों – विडियों दोनों रूप में आ रही है कहीं कोई पवित्रता भंग नहीं होती। मेरे कहने का तत्पर्य यही हे कि कुछ लोग हऊआ खड़ा कर देते है जो समाज के लिए घातक सिद्ध होता है उदाहरण के लिए श्री गुरु अरजन देव जी अपने जीवन काल में **श्री दरबार साहिब 'हरि मंदिर'** में गैलरी बनवा गये है जिससे संगत ऊपर भी बैठ सके। यदि उन्होंने ऐसा अपने जीवन काल में न किया होता तो कुछ दम्भी लोग पवित्रता के नाम पर उन सभी को प्रताड़ित करते जो श्री गुरु ग्रंथ साहिब कि हाज़री में ऊपर बैठने का सहस कर बैठते हैं। क्योंकि उनका बिरद शरीर पालथी मार कर बैठने के योग्य नहीं होता।

रहित मर्यादा का महत्त्व

यह बात भली भान्ति समझ लेनी चाहिए कि अमृत की शक्ति के पीछे वास्तव में सिक्खी की रहत अर्थात जीवनशैली ही काम करती है। यदि यह प्रश्न किया जाए कि रहित मर्यादा क्या है? तो हम उत्तर देंगे कि अपनी मनमत को त्याग कर गुरूमत को धारण करके उसके अनुसार जीवन व्यतीत करना ही रहत का धारणी होना है।

इस विषय पर गुरूदेव का हमारे लिए आदेश है –

इतु मारगि चले भाई अड़े, गुरू कहै सु कार कमाए जीउ।

तिआगे मन की मतड़ी, विसारे दूजा भाउ जीउ।

इउ पावहि हरि दरसावड़ा नह लगै तती वाउ जीउ। (सूही म. 5 पृष्ठ 763)

गुरूदेव के शब्द अर्थात उपदेश की वास्तविक रहत वही है, जो मनुष्य के अन्त:करण में से विकारों को समाप्त करके उस के मन में धर्म का प्रकाश उत्पन्न करता है।

पूरे गुरू के शब्द को जीवन में व्यावहारिक रूप देते हुए, सिख का एक विशेष प्रकार का स्वभाव बन जाता है। वही स्वभाव उसको बुराइयों से रोकता है और धर्म से गिरने नहीं देती - भले ही कितनी ही कठिनाइयाँ आ जाए। एक विशेष प्रकार की प्रवृत्ति बनाने के लिए ही सिख को प्रतिदिन नित्यनेम करने की हिदायत दी गई है और कहा -

रहिणी रहै सोई सिख मेरा, उह ठाकुर मैं उसका चेरा।

रहित बिना नहि सिख कहावै, रहित बिना दर चोटा खावै।

रहित बिना सुख कबहू न लहै, तां ते रहित सु दृढ़ कर रहै।

इसके अतिरिक्त गुरूदेव ने सतर्क किया कि यदि कोई व्यक्ति सिक्खी वेश-भूषा में तो रहता है किन्तु विधिवत गुरू दीक्षा नहीं लेता अर्थात पाँच प्यारों के समक्ष उपस्थित होकर अमृतपान नहीं करता तो मेरी उसके लिए प्रताड़ना है -

धरे केश पाहुल बिना, भेखी मूढ़ा सिख।

मेरा दरशन नाहि तिस, पापी तिआगे भिख।

इस प्रकार हुक्म हुआ जब तक खालसा पंथ न्यारा रहेगा, रहत पर चलेगा, तब तक वह चढ़दी कला अर्थात बुलंदियों में रहेगा परन्तु जब वह रहत में कोताही करेगा अर्थात अनुशासनहीन हो जायेगा तो उसका पतन निश्चित समझो और उन्होंने फरमान जारी किया।

जब लग खालसा रहे निआरा, तब लग तेज दीओ मैं सारा।

जब इह गहै बिपरन की रीत, मैं न करो इनकी प्रतीत।

गुरूसिख के लिए जहाँ मन की रहत अथवा अनुशासित जीवनशैली जरूरी है, वहीं तन की रहत भी जरूरी है। वह है पाँच ककारों का धारणकर्ता होना। पाँच ककारों के विषय में निर्देश इस प्रकार हैं -

नशानि सिखी, ई पंज हरफि काफ ।

हरगिज़ न बाशद, ई पंज मुआफ ।

कड़ा कारदो, काछ, कंघा बिदां ।

बिना केस, हेच अस्त, जुमला निशान । (भाई नन्द लाल गोया)

युवा पीढ़ी की बुजुर्गों से दूरियां

वर्तमान काल में बजुर्गों तथा युवा पीढ़ी में दूरियां बढ़ती जा रही हैं क्योंकि अधिकांश समृद्ध घरों में बच्चों के कमरे अलग है तथा उनके **TV. Set** तथा स्मार्ट फोन भी अलग है इस लिए वे लोग बजुर्गों से दूरी बनाएं रहते हैं पहले – पहले अक्सर **Table Talk** हो जाया करती थी अब वह भी सम्भव नहीं हो पाती खैर ......भगवान भली करे। अब प्रश्न यह है कि हम अपनी परम्परा (विरसा) उनतक कैसे पहुंचाएं?

समीक्षा

प्रकृति का यह नियम है कभी बाग – बगीचों में पतझड़ आ जाता है अत: वह विराना से दिखाई देते है परन्तु समय तथा ऋतु अनुसार बहारे फिर से लोट आती है। मुझे ऐसा जान पड़ता है जैसे ही समय हमारे अनुकूल हुआ गुरू नानक की फुलवाड़ी फिर से ज्यों कि त्यों हरी – भरी हो जायेगी। पंथ की गुरुदेव स्वयं अगवाई करेगें।

भेटा :– आप पढों तथा अन्य लोगों को पढ़ाऐ यदि चाहे तो आप इस पुस्तिक को छपवा कर निःशुल्क बटवा सकते हैं।

www.sikhworld.info

Donation : A/c HDFC : IFSC 0000450 04501570003814

website : www.sikhworld.info

इस वैब साईट की विशेषता

प्रिये गुरुमत के पाठकजनों। आपके चरणों में विनम्र विनती है कि आप को किसी भी **Library** में जाने की आवश्यकता नहीं है, अब आपके पास इस आधुनिक युग में एक विशेष **Website** उपलब्ध हैं जिसका नाम है **www.sikhworld.info** **यह Website** मूल रूप में सिक्ख इतिहास की है इस में सभी पुस्तकें बहुत विस्तृत रूप में तथा रोचकशैली में दो भाषाओं हिन्दी, तथा पंजाबी में उपलब्ध है। इस के प्रथम भाग श्री गुरू नानक देव जी से लेकर श्री गुरू गोबिंद सिंघ तक फिर दूसरे भाग में बन्दा बहादुर से लेकर स्वतंत्रता तक सिक्ख इतिहास है। ये पुस्तकें **Period-wise & Serial-wise** उपल्बध है। इसके अतिरिक्त गुरूवाणी अंताक्षरी, गुरूपर्व बुकलेट इत्यादि अनेकों गुरुमत सामग्री क्रमवार पड़ी हैं। ये सभी पुस्तकें **Down Load Free** हैं। अब मैं जो आप को महत्त्व पूर्ण बात बताने जा रहा हूँ । वह यह है कि इस **Website** के **Main Links** में एक फौजी नावल **(उपन्यास)** मित्र मण्डली है जिस में सभी भारतीय सैनिक दक्षिण तथा उत्तर भारत के हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई इत्यादि इक्ट्ठे बैरकों में मिल-जुल कर रहते हैं जो कि अवकाश के समय आपस में चुटकुले-शायरों-शायरी अथवा भांगड़ा नृत्य इत्यादि करते हैं उनकी जीवनशैली **Life-Style** पढ़ने योग्य है उनकी एक फौजी भाभी जी है जो उनका समय-समय पर मार्ग दर्शन करती है अत: यह नावल पढ़ने योग्य है, यह जहां मनोंरजन करती है वही ज्ञान वर्धक तथा परस्पर प्यार ही प्यार बांटती है।

नोट: कृप्या आप अपने मोबाईल में इस Sticker का फोटो ले ले और अपने मित्रगणों को WhatsApp कर दें। – धन्यावाद

यानी गुरू ग्रंथ साहिब।

प्रिये पाठकजनों आप के चरणों में विनम्र विनती है कि इस लघु पुस्तिका के अंत में एक वैब साईट का नाम **www.sikhworld.info** लिखा हुआ है यदि आप इस को खोलेगें तो आप इस के **Main Link** में एक उपन्यास **(Novel)** मित्र मण्डली पायेगें यह एक फौजी यथार्त घटना पर अधारित नावल है जो कि रोचकशैली में तो है ही इस के साथ ज्ञान वर्दक तथा मनोरंजन से भरपूर है जो आप की जिज्ञासा को तृप्त करेगा और आप आनंदित होंगे। अत: आप से निवेदन है कि इसे **Download** करके एक बार अवश्य पढ़े।

धन्यवाद

लेखक – जसबीर सिंघ